भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग ✦ INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

सत्यमेव जयते

आरोहण

वर्ष : 2017-18

ऑडिट भवन, अहमदाबाद

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद
तथा
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) गुजरात, अहमदाबाद

ऑडिट भवन, नजदीक ईश्वर भुवन, नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380 009.

आरोहण

प्रकाशक : कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), गुजरात

और

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) गुजरात,

अहमदाबाद की संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति

(मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा)

मुद्रक : महावीर फोर्म एन्ड रजिस्टर, अहमदाबाद

इस अंक में प्रस्तुत रचनाकारों के विचार स्वतंत्र है और उनकी रचनाओं की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जिम्मेदारी स्वयं रचनाकारों की है। पत्रिका परिवार का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपादकीय

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), गुजरात, अहमदाबाद एवं कार्यालय, प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), गुजरात, अहमदाबाद की संयुक्त हिंदी पत्रिका ''आरोहण'' अंक वर्ष २०१७-१८ के प्रकाशन के अवसर पर उपरोक्त दोनों कार्यालयों के सदस्यों को हार्दिक शुभकामनायें ।

''आरोहण'' के इस अंक की विशेषता है इसमें प्रकाशित होने वाली स्वरचित रचनाएँ । प्रधान महालेखाकार महोदय के अनुरोध से इस बार दोनों कार्यालयों के सदस्यों को स्वरचित रचनायें देने का प्रयास करने हेतु प्रेरित किया गया । इस आह्वान का सकारात्मक परिणाम मिला और पत्रिका के लिए बड़ी संख्या में कवितायें, लेख, संस्मरण इत्यादि प्राप्त हुए । सुखद अनुभव यह रहा कि गैर-हिन्दी भाषी सदस्यों ने भी उत्तम कोटि की रचनाएं देने का सार्थक प्रयास किया । यह इस बात का परिचायक है कि हमारे कार्यालयों में हिन्दी सर्वग्राह्यी है और हिन्दी में मौलिक रचनाकारों की कोई कमी नहीं है, आवश्यकता है तो बस इस उत्साह को बनाए रखने की ।

पूर्व के वर्षों की भाँति ''आरोहण'' के इस अंक में भी हमने हिंदी भाषा की अलग-अलग विधाओं की रचनाओं को सम्मिलित करने का प्रयास किया है ताकि पाठकों को पत्रिका पढ़ने में आनंद की अनुभूति हो । इस प्रयास में हम सभी पाठकों के आभारी हैं जिनके अमूल्य सुझावों से हमारा मार्गदर्शन हुआ है और पत्रिका को अधिक रोचक बनाने में हमें सहायता मिली है ।

अपेक्षा है कि पाठक अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें भविष्य में भी अवगत कराते रहेंगे । साथ ही यह भी अपेक्षा है कि अधिक से अधिक पाठक आरोहण के आने वाले अंकों हेतु अपनी मौलिक रचनाएं प्रकाशन हेतु प्रदान करके ''आरोहण'' को अधिकाधिक उत्कृष्ट बनाने में सहायता करेंगे ।

शुभकामनाओं सहित,

संपादक मण्डल

आरोहण

वर्ष : 2017-2018

संरक्षक : श्री हिमांशु धर्मदर्शी
प्रधान महालेखाकार

श्रीमती अर्चना गुर्जर
प्रधान निदेशक

संपादक मंडल : श्री संदीप कुमार बाजपेई, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री रविशंकर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री अनिल कुमार बेनीवाल, लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री जितेन्द्र कश्यप, लेखापरीक्षा अधिकारी
सुश्री श्वेता शुक्ला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादन सहयोग :

श्री अभिषेक पंवार, हिंदी अधिकारी
श्रीमती रीना अभ्यंकर
श्रीमती वीना यादव
श्री शिवानंद
श्री चिंटू गुप्ता

श्रीमती अंबिका वारियर, हिंदी अधिकारी
श्री दुर्गेश कुमार
श्रीमती निशा कुमारी

अनुक्रमणिका

क्रम	रचना का नाम	रचनाकार	विधा	पृष्ठ
१.	तो क्या कहते हो	श्री अभिषेक पंवार	कविता	१
२.	एक नया आसमान	सुश्री अनिता सिंह	कविता	२
३.	आज का मानव	श्री बालमुकुन्द त्रिपाठी	कविता	३
४.	माँ	सुश्री बिंदु वर्मा	कविता	५
५.	नमक की खेती	श्री हिमांशु एस. वर्मा	लेख	६
६.	जन्मदिन मुबारक	श्री जितेन्द्र कश्यप	कविता	१०
७.	स्मरण	श्रीमती कविता सिंह	लेख	११
८.	पहली तनख्वाह का सफर	श्री लितिन उपाध्याय	लेख	१२
९.	ऋणानुबंध	श्रीमती मल्लिका मुखर्जी	लेख	१३
१०.	आओ बसंत आओ	श्रीमती मल्लिका मुखर्जी	कविता	२०
११.	गर्व करो ! आप सरकार में हैं।	श्री मनीष मंगल	लेख	२१
१२.	देश सेवा	श्री मयंक मिश्रा	लेख	२४
१३.	मानव जीवन में क्षमा का महत्व	श्री मुकेश कुमार लाल	लेख	२६
१४.	जन्मदिन	श्रीमती मोनिका दवे	लेख	२८
१५.	आज	श्री नकुल शर्मा	कविता	३०
१६.	यह भारत में हुआ	श्री नकुल शर्मा	लेख	३१
१७.	सपना – एक किसान का	श्री प्रदीप कुमार	कविता	३४
१८.	पूजा नहीं कुछ काम करो	श्रीमती रचना सिंह	कविता	३५
१९.	जल	श्री राहुल मित्तल	कविता	३६
२०.	संत एवं समाज	श्री रमेश चन्द्र शर्मा	लेख	३७
२१.	जिन्दगी	श्रीमती रज़ीना मोरिसवाला	कविता	३९
२२.	मेरी नन्ही परी	श्रीमती सालिमा लाज़र	कविता	४०
२३.	आइये विचार करें	श्री संदीप बाजपेई	लेख	४१
२४.	आरुषी किरण माँ	श्री सत्येन्द्र कुमार	कविता	४४
२५.	विदाई	श्री शिवानन्द	कविता	४५
२६.	यू.एन.यात्रा का संस्मरण	श्रीमती सुनीता रेनॉय	लेख	४६
२७.	अहमदाबाद – मेरी माँ की नज़र में	श्रीमती वीना यादव	लेख	४८
२८.	जाने कहाँ गया वो बचपन	श्रीमती वीना यादव	कविता	५०
२९.	तनाव	श्रीमती विद्या अय्यर	लेख	५१
३०.	आखिर क्यों ?	श्री हिमांशु धर्मदर्शी	लेख	५२

आपके पत्र

१. आपके कार्यालय के पत्र के साथ 'आरोहण' के १८ वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई । एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक होते हुए कर्मचारियों को अभिव्यक्ति का मंच भी उपलब्ध करवा रही है । हिंदी भाषा के सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है ।

पत्रिका में समाविष्ट विविध विषयों पर रचनाएँ सरल भाषा में हैं और रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उच्च कोटि की भी हैं जिससे राजभाषा हिंदी के विकास की दिशा में द्रुत गति से अग्रसर होती प्रतीत हो रही है । 'आरोहण' के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं ।

मंगल कामनाओं के साथ ।

भवदीया,

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), तमिलनाडु, लेखापरीक्षा भवन, ३६१, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई-१८

२. आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'आरोहण' की प्राप्ति हुई । पूरी पत्रिका मनोयोग से पढ़ी तथा पढ़ने के लिए प्रस्तुत की गई । पत्रिका में प्रकाशित अधिकांश रचनायें इस कार्यालय के सभी कार्मिकों को अच्छी लगीं । पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद ।

पत्रिका के साथ प्रेषित पत्र में इस कार्यालय की पत्रिका 'आँचल' संबंधी आपकी प्रशंसा से हम अभिभूत हुए । आपके मूल्यवान सुझावों की प्रतीक्षा आगे भी रहेगी ।

आपकी पत्रिका 'आरोहण' की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ की सरलता अधिक मोहक प्रतीत हुई । संपादक मंडल की मेहनत दृष्टिगोचर हो रही है । इस पत्रिका में संकलित रचनायें उत्कृष्ट तथा ज्ञानवर्धक हैं । पत्रिका की कुछ रचनायें अत्यंत रूचिकर हैं जिनमें से गीतिका, आशीर्वाद की अनुभूति, माँ-बाप को बिखरने ना दें, बोन्साई तथा आहट प्रमुख हैं । सुश्री रितु सिंह विरचित 'माँ की आंखों की नमी नहीं बदलती' ह्रदय में उतरने वाली अति प्रशंसनीय रचना है । अन्य रचनायें भी बहुत ही आकर्षक एवं प्रशंसनीय है। भविष्य में रचनाकारों के छायाचित्र सहित रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हमारी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
तथा पदेन सदस्य, लेखापरीक्षा बोर्ड-१, मुम्बई

हिंदी पखवाड़े के दौरान गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी का सन्देश पढ़ती हुई उप महालेखाकार श्रीमती रचना सिंह

तो क्या कहते हो....

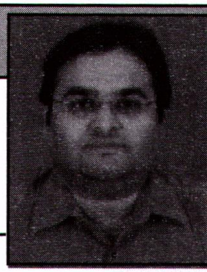

अभिषेक पंवार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जो भी सुना अच्छा है मैंने,
अपने तक रख छोड़ूँ उसको,
या सोच कर कुछ अलहदा,
आगे कह दूँ मैं किसी को,
तो क्या कहते हो.... कह दूँ क्या....
अरे....
क्या कहूँ और क्यूँ कहूँ
यह सोचकर है मौन रहना
या कहूँ जो है जरूरी, पल के लिए
कुछ तो करूँ, कुछ तो कहूँ, कल के लिए
तो क्या कहते हो.... कह दूँ क्या....
अरे....
कब कहोगे तुम, कब तक सहोगे,
अपने से ही द्वन्द्व तुम लड़ते रहोगे
या तिमिर को चीरती रेखा बनोगे
जब संभलकर मन के रण में तुम उठोगे
तो क्या कहते हो.... कब कहोगे ?

• • •

एक नया आसमान

अनिता सिंह
वरिष्ठ उप महालेखाकार

छोड़ सारी बंदिशें, रंजिशें और उलझन,
भर कर मन में एक नया उल्लास,
लेकर संग एक प्रफुल्लित स्वयं को,
उड़ चलूँ मैं और छू लूँ एक नया आसमान....

झाड़ने हैं अभी गर्द कई,
करनी है दूर बेबसी कई,
स्वयं ही स्वयं को संभालते हुए
पाना है फिर एक नया आसमान....

करवटें बदलती रही जिंदगी,
हर मोड़ मिला एक नया द्वंद्व,
हर संघर्ष से (सीख) कर सबक,
अब चलो ज़रा बढ़ें हम ओर
एक नया आसमान....

हर दिन है अवसर,
कुछ पाने और कुछ खोने का
इन्हीं से गुज़र कर ही तो
मिलेगा मुझे मेरा नया आसमान....

आज का मानव

बालमुकुन्द त्रिपाठी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

वो जो था कल का कोलाहल, सुमुखि क्या सुन लिया तुमने ।
समस्या गूढ़ थी, पर हल जो आया, सुन लिया तुमने ।

अदालत में उपस्थित थे, बहुत ही विज्ञ औ ज्ञानी ।
मनुजता से परे, थे स्वार्थरत, थे और अभिमानी ॥

बहस जब होने लगी, तो रो दिया मैंने ।
कलेजे पर रखा पत्थर, फिर बोझा सह लिया मैंने ॥

इसी दिन के लिए ईश्वर, मुझे तुमने बनाया था ।
ये सारी सृष्टि है तेरी, यही कहकर पढ़ाया था ॥

यहाँ आकर मेरा बचपन बहुत ही मौज में बीता ।
मेरी माँ ने बताया मेरे ईश्वर, राम और सीता ॥

मगर जैसे बड़ा होता गया, कुछ यूँ किया मैंने ।
पढ़ी गीता मगर साथ ही कुरान भी पढ़ लिया मैंने ॥

सभी धर्मों को पढ़कर मैंने बस ये बात सीखा था ।
नहीं करना किसी का भी अहित ये पाठ सीखा था ॥

मैं एक दिन घर के दरवाज़े पे बैठा, पढ़ रहा पेपर ।
अचानक एक गाड़ी आ रुकी, मेरे सामने आकर ॥

थे उसमें चार जन, जो वस्त्र से थे धर्म अनुयायी ।
मगर आँखें थी हिंसक, देखने में थे वो भयदायी ॥

उतर चारों वो मेरे पास आए और एक बोला ।
बता क्या नाम है तेरा ? सुना है, है तू बड़बोला ॥

बता दे धर्म क्या तेरा ? है तेरा कौन सा ईश्वर ।
मैं बोला रोष क्यों करते हो, बैठो शांतचित्त होकर ॥

है मेरा धर्म माँ-पिता ! मैं मानव का पुजारी हूँ ।
सभी हैं धर्म सम, मेरे लिए, मैं शांतिकारी हूँ ॥

तो बोले धर्म तो मेरा ही है एक श्रेष्ठ, तुम सुन लो ।
नहीं कोई भी इसके है बराबर, बात ये गुन लो ॥

अत: कहकर, कि सब हैं सम, किया अपमान है तूने ।
तथा लोगों को समझाया, किया यह पाप है तूने ॥

समझ पाता मैं कुछ तब तक, कि सिर ये फट गया मेरा ।
चली बह रक्त की धारा, शिथिल तन हो गया मेरा ।

जब होश आया तो चारों ओर मेरे डॉक्टर जन थे ।
थी तन में अब न पीड़ा, पर हृदय में ज़ख़्म कम न थे ॥

अदालत में मुकदमा आज था, तारीख़ पहली थी ।
बड़ी उम्मीद में, मेरी नज़र, हाकिम पे ठहरी थी ॥

मगर जितने गवाह आए, सभी ने बात दोहराई ।
कि मैं हूं नास्तिक, और नास्तिकता मैंने फैलाई ॥

और उस दिन की घटना में भी, मैंने ईश-निंदा की ।
तभी इन सभ्य लोगों ने मेरे ऊपर ये हिंसा की ॥

फिर आया फैसला, जो बहु प्रतीक्षित और इच्छित था ।
मेरा छः मास, श्रम के साथ, कारावास निश्चित था ॥

विचारा मन में मैंने, क्या यही है आज का मानव ।
जिसे बस अहं, अपने श्रेष्ठ होने का नहीं दानव ॥

मनुजता है नहीं, बस अपनी - अपनी स्वार्थपरता है ।
यही है आज का मानव, यही है आज का मानव ॥

• • •

माँ

बिंदु वर्मा
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

जाने कब से सोई नहीं हूँ मैं, सुला दो माँ,
आकर मेरे पास मुझे फिर से लोरियाँ सुना दो माँ ॥
आँसू मेरी आंखों में जम से गये हैं,
भरकर दिल मेरा मुझे अब रुला दो माँ ॥
भूखी हूँ मैं तेरे प्यार भरे निवालों की,
अपने हाथों से एक निवाला खिला दो माँ ॥
कैसे-कैसे दर्द देकर दुनिया रुलाने लगी है मुझे,
आँचल में लेके मुझे इनसे निजात दिला दो माँ ॥
कोई नहीं है मेरा ये अहसास दिलाने लगी है दुनिया,
थामकर हाथ अपने होने का अहसास दिला दो माँ ॥

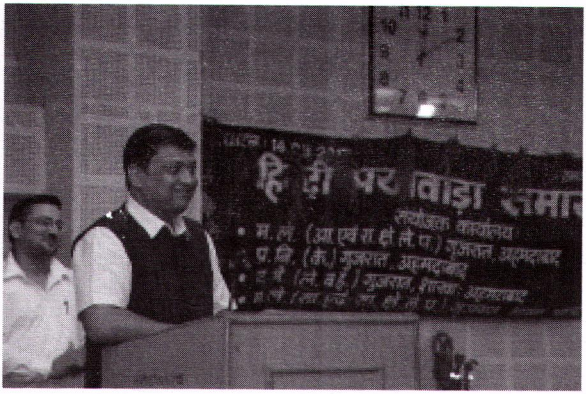

हिंदी पखवाड़े में सभा को संबोधित करते हुए
श्री हिमांशु पंड्या (कुलपति, गुजरात विश्वविद्यालय)

नमक की खेती

हिमांशु एस. वर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

यह उस समय की बात है जब मैं क्षेत्रीय दल में तैनात था और हमारा दल ''कन्ज़र्वेशन ऑफ वेटलैन्ड्स'' से संबंधित निष्पादन लेखापरीक्षा कर रहा था। निष्पादन लेखापरीक्षा के समय हमने कच्छ के छोटे रण को भी चुना था। अप्रैल के महीने में जब हमने कच्छ के रण की यात्रा की, उस प्रसंग का वर्णन करना चाहता हूँ।

अहमदाबाद से १३० किलोमीटर दूर कच्छ का छोटा रण जहाँ घुड़खर (Wildass) अभ्यारण्य भी है, वहाँ गुजरात राज्य के कच्छ जिले के उत्तर तथा पूर्व में फैला हुआ एक नमकीन दलदल का वीरान प्रदेश है। गर्मियों में तापमान ४४-५० डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाता है किन्तु वर्षा ऋतु के बाद लगभग चार महीनों तक बरसात का पानी रण में भरा रहता है और अक्तूबर से फरवरी तक कच्छ के छोटे रण में विदेशी पक्षी जैसे क्रेन, बत्तख, पेलिकन, फ्लेमिंगो और भारतीय बस्टर्ड का डेरा लगता रहता है।

लेखापरीक्षा के दौरान हम लोग ध्रांगध्रा में अतिथि गृह में ही ठहरे हुए थे। घुड़खर अभ्यारण के कार्यालय पहुँचकर वहाँ पर दस्तावेजों की जाँच करते-करते वहाँ के स्थानीय कर्मचारियों से रण के बारे में भी जानने की उत्सुकता थी। तभी वहाँ एक स्थानीय कर्मचारी श्री बी. आर. मकवाणा ने रण के बारे में जानकारी दी और बताया कि घुड़खर अभ्यारण में थोड़ा अन्दर जाने के बाद नमक की खेती भी होती है। सुनकर अजीब सा लगा ''नमक की खेती'' ?

लेखापरीक्षा के दौरान हम लोगों को रण की यात्रा भी करनी थी। इस वजह से हम दो दिन बजाणा भी रुके थे, जहाँ घुड़खर अभ्यारण्य था। एक दिन सुबह साढ़े पाँच बजे जब हम रण देखने गये, ऐसा लग रहा था मानो

रण में दूर कहीं गुलाबी रंग की चादर फैली हो और ऐसा इसलिये लग रहा था क्योंकि वहाँ पर फ्लेमिंगो इतनी ज्यादा संख्या में आते हैं कि उनकी गिनती करना भी संभव नहीं होता। सुबह-सुबह का यह नज़ारा देखते ही बनता था। पक्षियों की चहचहाहट, आसमान में उड़ते पंछी, एक अद्‌भुत आनंद की प्राप्ति हो रही थी। लगभग एक घंटा सैर करने के बाद हम वन विभाग के गेस्ट हाउस वापिस चले गये और तैयार होकर लेखापरीक्षा का थोड़ा काम निपटाया।

जैसा कि श्री बी. आर. मकवाणा जी ने नमक की खेती के बारे में बताया था, वो बात दिमाग में घूम रही थी क्योंकि एक और कार्य जो कि 'वेल्फ़ेयर एक्टिविटी फ़ॉर सॉल्ट वर्कर्स' से संबंधित था, उससे संबंधित ज़रूरी जानकारी भी हमें एकत्र करनी थी। हम लोगों ने घुड़खर अभ्यारण में दोपहर में जाने की योजना बनायी और बजाणा जहाँ कि घुड़खर अभ्यारण्य का गेस्ट हाउस है, वहाँ से तैयार होकर लगभग सुबह ११ बजे घुड़खर और जहाँ नमक बनाते हैं वह क्यारी (सॉल्ट पैन) देखने के लिये रवाना हुए।

लगभग ३० मिनिट के बाद हमने घुड़खर देखे। काफ़ी तेजी से भागने वाले, कसा हुआ शरीर, कई दिनों से बिना नहाये पर एक दम तरो-ताज़ा नज़र आ रहे थे घुड़खर। गरमी ने भी अपना काम करना शुरू कर दिया था। लगभग १२.३० बजे हम लोग नमक बनाने की प्रक्रिया जहाँ होती है, वहाँ पर पहुँच गये।

दूर-दूर तक बस नमक की क्यारियाँ नजर आ रही थी। जहाँ पानी भरा हुआ था वो हिस्सा ऐसा लग रहा था, जैसे पानी का बंटवारा किया हो। मैंने एक वीडियो भी बनाया था जिसमें ज़मीन से मोटर द्वारा पानी जो कि खारा पानी था, उसे एक मिट्टी की छोटी सी क्यारी द्वारा लगभग १०० मीटर दूर बने बड़े सॉल्ट पैन में डाला जा रहा था और वहाँ से वह खारा पानी अलग-अलग क्यारियों में जा रहा था। हम पानी के ऊपर से ही सॉल्ट पैन में नमक की डलियाँ देख पा रहे थे। श्री बी. आर. मकवाणा जो कि रेंज फोरेस्ट ऑफिसर थे, ने नमक बनाने वाले कालूभाई से मुलाकात करवाई। हमने जब कालूभाई को पूछा कि आप कितना कमा लेते हो एक साल में, तब उनके चेहरे

पर एक अजीब सी उदासी छा गई जैसे हमने यह पूछ कर कोई बड़ा गुनाह कर दिया हो ।

शायद हमने गुनाह ही किया था क्योंकि जब उसने बताया कि साहब हम चार महिने गाँव में रहते हैं तो चार महीने यहाँ रण में । जिस समय हम बात कर रहे थे तब वहाँ का तापमान लगभग ४४ डिग्री था । वो बोले कि यहाँ बिजली तो है नहीं इसलिये डीजल सेट लगाकर ज़मीन से पानी खींचते हैं, जिसका डीज़ल का खर्चा ही लगभग ८०-९० हज़ार रुपये सालाना ठेकेदार को देना पड़ता है । इसके अलावा खाने-पीने के व बच्चों को पढ़ाने के खर्चे के बाद कुछ बचता ही नहीं है बल्कि हर साल हम कर्ज़ लेकर अपना गुजारा कर रहे हैं । हमने पूछा आप कब से यह काम कर रहे हो ? तब उन्होंने अपनी सात साल की बच्ची को बुलाते हुए कहा, साहब जब मैं इसकी उम्र का था तब से पिताजी के साथ आया करता था और पिताजी के गुज़र जाने के बाद से यह हमारा पुश्तैनी काम कर कहा हूँ । उस बच्ची की शिक्षा के बारे में जब हमने पूछा तो उन्होंने कहा कि कभी-कभी स्कूल चली जाती है पर पूरी तरह वह बता नहीं पाये क्योंकि वह लड़की को पढ़ने भेजते ही नहीं थे । ४४ डिग्री तापमान में भी उस लड़की के पैरों में चप्पल तक नहीं थी । परिवार में उसकी पत्नी थी जो सॉल्ट पैन में काम कर रही थी । उस बच्ची को देखते ही उसे चॉकलेट, बिस्कुट और चिप्स देने की तीव्र इच्छा हो रही थी परंतु मैं और अन्य सभी लोग लाचार थे क्योंकि वहाँ रण में दूर-दूर तक कोई दुकान नहीं थी। मेरी आँखें भर आयी और मैं अपनी जेब से सौ रुपये का नोट निकाल कर उस बच्ची के हाथों में थमा कर कार की तरफ चलने लगा क्योंकि मैं अपने अति संवेदनशील स्वभाव की वजह से उस बच्ची को और किसी भी इस तरह के बच्चों को देख नहीं पाता हूँ।

आज भी जब मैं उस दिन को याद करता हूँ तो आँखें नम हो जाती हैं और उस बच्ची का चेहरा जो कि अब ठीक से याद भी नहीं है, और वो पूरा दृश्य सामने आ जाता है और दिमाग में एक ही बात चलती है कि क्या वह बच्ची भी अपने पापा की तरह हमेशा के लिये उसी पुश्तैनी कार्य में जुट

जायेगी ? क्या उसे कभी आईसक्रीम, चॉकलेट का स्वाद चखने को मिलेगा ? क्या उसे बीमारी के वक्त प्राथमिक चिकित्सा मिलती होगी ? क्या वह अपनी पढ़ाई करेगी ? क्या उसे गर्मियों में, बारिश में और ठंड में चार-दिवारी और छत मिलती होगी ?

मैं बस इतना चाहता हूँ कि जब हम रोटी खाते हैं तब उन नमक बनाने वालों का आभार मानें कि जो इस तरह की परेशानियों से गुजरते हुए भी अपना पुश्तैनी काम किये जा रहे हैं और सरकार तक इनकी आवाज पहुँचाएं कि कम से कम इन्हें भी अपनी प्राथमिक सुविधायें जैसे कि दो वक्त की रोटी, पहनने को कपड़े, सिर छुपाने के लिये एक छत और उनके बच्चों को प्राथमिक शिक्षण के लिये स्कूल की व्यवस्था करें । ठेकेदारों की बजाय सरकार द्वारा डीज़ल पंपसेट की व्यवस्था की जाये ताकि उनकी पीढ़ियों से चली आ रही परेशानी दूर हो जाए ।

"अपने लिए तो सभी जीते हैं इस जहां में,
हो जिन्दगी का मकसद औरों के काम आना"

दीप प्रज्ज्वलित करके हिंदी पखवाड़े का शुभारम्भ करते हुए
प्रधान महालेखाकार महोदय श्री हिमांशु धर्मदर्शी

जन्मदिन मुबारक

जितेन्द्र कश्यप
लेखा-परीक्षा अधिकारी

मुबारकबाद तुझे दूँ या उसे,
जिसने तुझे है बनाया ।
लौटकर आज फिर वो,
हसीं दिन भी आया ।
समेटकर जब सारे जहाँ की खूबसूरती,
चेहरा तेरा बनाया ।
घटा भी मायूस बैठी है जब,
लहराया जुल्फों का तेरी घना साया ।
देखकर गुलाबी होंठ उनके,
हर फूल गुलाब का है मुरझाया ।
नज़ाकत बख्शी है उनको ऐसी कि,
मलमल भी आज है सिलवटाया ।
दीदार हुआ जब उनका तो,
ऐसा लगा हूर है या संगमरमर की कोई काया ।
है ये करम तेरा या,
पिछले जन्म का बकाया ।
कि आज हमने इतना,
हसीं महबूब है पाया ।
मुबारकबाद तुझे दूँ या उसे,
जिसने तुझे है बनाया ।

स्मरण

कविता सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मैं और मेरे पति धीरज गुजरात दर्शन की यात्रा पर निकले थे। पोरबंदर के रास्ते में हमारी गाड़ी खराब हो जाने के कारण हम पैदल ही घूमने निकल पड़े। रास्ते में हमे एक घायल कुत्ता दिखाई दिया। उसके पैरों से खून निकल रहा था। शायद किसी गाड़ी से उसका एक्सीडेंट हो गया था। कुत्ते को शायद दर्द बहुत हो रहा था इसलिए चीख-चिल्ला रहा था। वो चल फिर भी नहीं पा रहा था। धीरज को उस पर दया आने लगी। उन्होंने मुझसे कहा अगर किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया तो बेचारा दर्द के मारे मर जाएगा। चूंकि मुझे कुत्ते पसंद ही नहीं, इसलिए मैंने कुछ ध्यान नहीं दिया। धीरज वहीं रुक गए, २-३ मिनट तक कुछ सोचने लगे, फिर अपनी जेब से रुमाल निकाल कर उस कुत्ते की चोट पर पट्टी बांध दी ताकि खून बंद हो सके। पास की एक दुकान से एक दूध का पैकेट और बिस्कुट खरीदा। मेरे पास एक टिफिन था जिसमें उन्होने दूध निकाला और बिस्कुट उस कुत्ते के सामने रख दिए। यह देख मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि देखते ही देखते कुत्ते ने दूध और बिस्कुट पूरा खत्म कर दिया। शायद उसे भूख बहुत लगी होगी। धीरज ने गूगल मैप के द्वारा पशुचिकित्सक के अस्पताल का पता लगाया। फिर उस कुत्ते को गोद में उठाकर पशुचिकित्सक के पास ले जाकर उसका इलाज करवाया।

यह सब देखकर मुझे थोड़ा अजीब लग रहा था, कहाँ हम गुजरात दर्शन को निकले थे और कहाँ अटक गये। खैर, तब तक हमारी गाड़ी भी ठीक हो चुकी थी और हम सोमनाथ के दर्शन के लिए निकल पड़े। गाड़ी में बैठने के बाद मैं इस पूरी घटना के बारे में सोचने लगी। अब मुझे एक सुखद अनुभूति होने लगी थी।

पहली तनख़्वाह का सफर

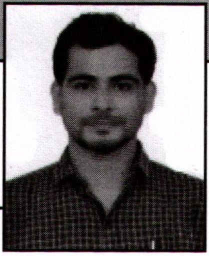

लितिन उपाध्याय

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ख्वाबों को एक हसीन मुकाम मिल गया है,
जीवन को नयी दिशा, खुला आसमां मिल गया है ।
देखते ही देखते, मेरा सपना पूरा हुआ है,
जिसके लिए मां का चेहरा देखे हुए अरसा हुआ है ।
पिता को बीमारी में देखने भी न जा पाता था,
उनकी यादों में त्यौहारों को भी भूखा सो जाता था ।
रक्षाबंधन बिना बहनों से मिले ही निकल जाते,
दोस्तों से मिले लम्बे अरसे बीत जाते ।
दिवाली के दियों की रोशनी फीकी पड़ रही थी,
फिर भी उम्मीद में जीत की हर सांस लड़ रही थी ।
बढ़ता रहा, लड़ता रहा, नींद के झोंकों से झूलता रहा,
परेशानियों के सफर में आज की उम्मीद में जीता रहा ।
आखिर आज वह खुशी का पल आ ही गया है,
मेरी जेब में भी खुद की मेहनत का पैसा आ ही गया ।
अब मेरे जीवन में भी आ गयी है खुशी की बहार,
अब बहुत अच्छा लगने लगा है ये सारा संसार ।
आ गयी है बारी सभी के कर्ज़ों को चुकाने की ।
हंसने, खेलने और मिलकर खुशी मनाने की ।
अब बारी है फिर से नये लक्ष्य बनाने की ।
खुद को खपाने की और फिर से जीत जाने की ।

ऋणानुबंध

मल्लिका मुखर्जी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, सेवा निवृत्त

वर्ष २०१८, फरवरी का महीना। आज सत्रह तारीख है। अहमदाबाद का सेटेलाइट विस्तार। आनंदनगर रोड पर स्थित शुभकामना को-ऑपरेटिव हाउसिंग सोसायटी की कोठी नम्बर १८, हमारा निवास स्थान। प्रातः छ बजे हैं। चाय की चुस्कियाँ लेते हुए अखबार के पन्ने फेर रही हूँ। रोज़मर्रा की खबरें अब कोई संवेदना पैदा नहीं करती। राजनीति के समाचारों में अब कोई रुचि नहीं रही। भ्रष्टाचार ने भारतीय अर्थतंत्र को दीमक की तरह खोखला कर दिया है। हर आम आदमी की तरह मैं भी भ्रष्टाचार के दैत्य से निजात पाना चाहती हूँ। दिव्य भास्कर की सिटी भास्कर पूर्ति के पन्नों पर नजर फेरते हुए मेरी नजर ठहर गई सिटी अंक के एक समाचार पर। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अहमदाबाद कैनाइन क्लब द्वारा शहर के सोला भागवत इलाके में स्थित मांगल्य वाटिका पार्टी प्लाट में १८ फरवरी यानि आगामी कल चैम्पियनशिप डॉग शो का आयोजन किया गया है, जिसमें गुजरात भर से २८ विभिन्न प्रजातियों के भारतीय और विदेशी, कुल मिलाकर करीब २०० श्वान हिस्सा लेंगे। उन्हें उनके कद के अनुसार छः ग्रुप में बाँटा गया है। विभिन्न ग्रुप? मेरी दिलचस्पी बढ़ी। मैं पढ़ने लगी - टॉय ग्रुप, यूटिलिटी ग्रुप, टेरियर ग्रुप, हाउंड ग्रुप, गन डाग ग्रुप, वर्किंग ग्रुप, पेस्टोरिअल ग्रुप आदि। इन ग्रुप में पग, पोमेरेनियन, डालमेशियन, केन टेरियर, बिगल, अफगान हाउंड, लेब्राड़ोर, रिट्रीवर, पोइन्टर, बॉक्सर, ग्रेट डेन, डोबरमन, जर्मन शेफर्ड आदि श्वानों को उनके कद के अनुसार विभिन्न ग्रुपों में बांटा गया है।

पढ़ते-पढ़ते मन अचानक क्षुब्ध हो गया। मेरा पालतू श्वान जैकी भी अब नहीं रहा जो वर्किंग ग्रुप में आ सकता था। पर लाली? वह तो मिश्र प्रजाति की थी, किसी भी ग्रुप में नहीं आ सकती थी। नज़र के सामने मेरी प्यारी कुतिया लाली का चेहरा सादृश होने लगा। मेरी नज़र बैठक खंड की काँच

की दीवार से दिख रहे बगीचे में जैसे लाली को ढूंढने लगी । कहीं उसका सुंदर चेहरा दिख जाए । जो संभव नहीं वह चाहत कितनी पीड़ा देती है । आज से ठीक नौ वर्ष सात महीने और पंद्रह दिन पहले दो जुलाई २००९ के दिन लाली इस दुनिया को छोड़ गई । इस बगीचे में ही हमने उसे दफनाया है । यहीं बगीचे की ज़मीन पर तो वह अपना आश्रय ढूंढ रही थी । जो ज़मीन प्रकृति ने हर जीव के लिए समान रुप से दी है उस पर इस मानव नामक जीव ने किस बेरहमी से कब्ज़ा किया है इस बात का अहसास कभी मुझे न हो पाता अगर लाली मेरे जीवन में न आती । गलती तो हर किसी से होती है पर ऐसी गलती जो जीवन के प्रति सही अभिगम को नजरअंदाज कर जाए वह तो क्षम्य नहीं होनी चाहिए । उसकी आकुल आँखों में छिपी व्यथा जो मेरे बेटे सोहम ने देखी वह मुझे क्यों नहीं दिखाई दी ? उसका मूक अंतर्नाद जो सोहम ने सुना वह मुझे क्यों नहीं सुनायी दिया ?

एक सिहरन सी दौड़ गई थी मेरे सारे बदन में जब मैंने पहली बार आज से करीब ग्यारह वर्ष पहले उस कुतिया को देखा था । अपनी कोठी के कम्पाउंड की दीवार पर खड़ी थी । सारे बदन पर एक भी बाल नहीं । बिना बाल के नंगे बदन पर मक्खियाँ भिनभिना रही थी । घाव से भरा बदन जैसे जिन्दा कंकाल मुझे देखकर वह दीवार कूदकर भागी । दूसरे दिन मैंने देखा वह आकर बगीचे के एक कोने में दुबकी बैठी थी । मैंने कोने में पड़ा डंडा उठाया । वह कम्पाउंड की दीवार कूदकर भागी । अब यह रोज़मर्रा की मुश्किल होने लगी । दिन में कभी भी वह आती बगीचे की मिट्टी में छोटा सा गड्ढा बनाकर बैठ जाती । मुझे लगता यह कुतिया मेरा बड़े शौक से बनाया बगीचा नष्ट कर देगी । बार-बार वह छोटे-छोटे गड्ढे बनाकर बैठ जाती । मेरी परेशानी बढ़ने लगी । अब मेरा ध्यान बगीचे में ही लगा रहता । जब भी वह दिख जाती मैं उसे भगाती ।

अचानक उसका दिखना कम हो गया । मैंने राहत का दम लिया । कुछ महीने बाद एक बार फिर वह दिखी । आश्चर्य ! क्या यह वही कुतिया है जिसे मैं लगातार भगाया करती थी ? हाँ वही तो थी । अब उसके बदन पर नए बाल उग आए थे । सेहत भी कुछ ठीक लग रही थी । उसने एक नज़र मेरी तरफ डाली । उसकी आँखों में वही करुणा दिखी जो पहले भी थी । मैंने अपने बेटे

सोहम से पूछ देखो बेटे इस कुतिया का रंग रूप कितना बदल गया है। मैं उसे पिछले कुछ दिनों से पेडिग्री खिला रहा हूं आपने जो जैकी के लिए खरीदा था न ? वही । जैकी तो नहीं खाता मैंने सोचा इसे खिलाकर देखूं । उसने दबी आवाज में कहा । मैंने सोहम की ओर देखा । उसके चेहरे पर खुशी झलक रही थी । अपने आप पर मुझे बड़ी शर्म आई । यह अबोध जीव जो कुपोषण की शिकार थी ऊपर से बीमारी ने उसे परेशान कर रखा था । अब मुझे ध्यान आया कि सोहम शहर के एनीमल हेल्थ फाउन्डेशन नामक एक गैर सरकारी संस्था मे जाता रहता था जो मुख्यतया श्वान के लिए काम करती है। हो सकता है वहाँ से कुछ दवाईयाँ भी लाया हो । हो सकता है चुपके चुपके उसे दूध भी पिला रहा हो । मैने अपनी झिझक छुपाते हुए कहा पर आजकल यह दिखती भी नहीं है न बगीचे की मिट्टी खराब करती है वह रहती कहा हैं ? माँ उसे मेंज (Mange) नामक बीमारी हुई थी जिसमें सारे बदन में खुजली आती है, त्वचा में घाव होने लगते है । बाल झड़ जाते है । यह कुतिया किसी परिवार में पालिता थी हो सकता है बिमार होने से उसे छोड़ दिया गया इसे स्ट्रे डॉग की तरह रस्ते पर पडे कूड़े कचरे से खाना ढूंढना नहीं आता । यह भूख से मर रही थी उसकी प्रबल जिजीविषा ने ही उसे जिन्दा रखा है। अब वो हमारे घर की छत पर बैठी रहती है। मैने एक बस्ता बिछा दिया है। हे भगवान मेरे मुँह से यही शब्द निकल पाए। कोठी की सीढ़िया बाहर की ओर थी जहाँ से वह छत पर आ–जा सकती थी । ठीक है तुम उसका ख़्याल रखना।

मेरी बात से सोहम का हौसला बढ़ा । वह बोला माँ अहमदाबाद में ऐसे कई रईस परिवार हैं जो अपनी प्रतिष्ठा के हिसाब से खूब कीमती, अच्छी प्रजाति का श्वान पाल तो लेते हैं लेकिन उसे रखने का सही तरीका नहीं जानते । अनजाने ही उस प्राणी पर अत्याचार होता रहता है और अगर वह बीमार हो जाए तो उस की चिकित्सा करने की बजाए उसे ऐसे ही मरने के लिए छोड़ देते हैं । मुझे लगा जो लोग पालतू श्वान को छोड़ देते हैं और जो उसे सहारा भी नहीं दे पाते दोनों ही तो एक जैसे गुनहगार हैं । हमारे घर में भी तो पालतू श्वान जेकी है । जेकी ने कभी इस कुतिया को अपने बगीचे से नहीं भगाया। प्राणियों में भी आपस में सहानुभूति होती होगी क्या ? इस सृष्टि में बहुत सी ऐसी बातें हैं जो किसी अचरज से कम नहीं । मानव की तरह अन्य जीव भी

अपने मनोभाव व्यक्त कर सकते हैं, अपनी प्रसन्नता–पीड़ा व्यक्त कर सकते हैं। पारस्परिक सहयोग का यह किस्सा मुझे बहुत देर से ध्यान में आया। जैकी तब बीमार था। उसकी उम्र करीब अठारह साल की थी। डॉक्टर का कहना था कि हमारी सही देखभाल की वजह से ही वह इतनी लम्बी आयु तक जिन्दा था। उसे कोई विशेष बीमारी नहीं थी। उम्र का तकाज़ा था। मैने यह नोटिस किया था कि किसी भी बाहर के श्वान को हमारे बगीचे में आने से रोकने वाला जेकी इस बीमार कुतिया को कुछ न करता, बल्कि कभी कभी मैंने उसे उस बीमार कुतिया के करीब खड़ा पाया जैसे अपनी मूक सांकेतिक भाषा में कुछ कह रहा हो।

दूसरे दिन मैं छत पर गई, वह सो रही थी। उसके पास जाते ही वह अपनी पूंछ हिलाने लगी। मैने धीरे से उसके सिर पर हाथ रखा। स्पर्श की भी एक भाषा होती है। उसकी आँखों में मुझे अपार करुणा दिखी। मैं अक्सर उससे मिलने लगी। वह पूँछ हिलाकर अपनी खुशी जताती। धीरे धीरे वह बिलकुल ठीक हो गई। दिन भर कहीं भी जाती पर उसका रहने का ठिकाना अब हमारी कोठी का कम्पाउंड ही था। समय बीतता चला। एक दिन मैं उसे खाना दे रही थी। मुझे लगा उसका शरीर थोड़ा भारी दिख रहा है। वह गर्भवती थी। कुछ महीने बाद उसने कोठी के पिछवाड़े सोसायटी के कॉमन प्लॉट में जहां बिजली का सब स्टेशन है सीढ़ियों के नीचे छः बच्चों को जन्म दिया। मैं उसे देखने गई। बड़ी कमज़ोर लग रही थी। मैने एक कटोरी में थोड़ा दूध और कुछ रोटियां लीं और उसे दे आई। उसने तुरंत खा ली। कुछ दिन इसी तरह मैं उसे खाना देती रही। पिल्लों ने अभी आंखे नहीं खोली थी। दिसम्बर का महिना था। कड़ाके की ठंड थी। एक रात करीब तीन बजे मुझे अपने बगीचे में पिल्लों की आवाज सुनायी दी। मैंने अपने पति को जगाया। कौतूहलवश हम दोनों टॉर्च लेकर बाहर निकले। बगीचे के गेट के पास बोगनवेल के तने के पास एक गहरा गड्ढा दिखा। उस में वे सारे पिल्ले एक दूसरे से सटकर बैठे थे। ठण्ड से सिकुड़ रहे थे। कमरे में आकर सोने की कोशिश करने लगी पर नींद न आई। सुबह उठकर सोहम से यह बात कही। उसने कहा हाँ माँ रात भर सीढ़ियां चढ़ने उतरने की आवाज आ रही थी। अब समझ में आया हमारे कम्पाउन्ड की दीवार करीब चार फीट ऊँची थी।

नवजात पिल्लों को मुँह में दबाकर उस ऊंची दीवार को कूदना मुश्किल था। हमारे पडोसी की कोठी के कम्पाउन्ड की दीवार सिर्फ ढाई फीट ऊँची थी। दोनों कोठियाँ कॉमन दीवार से जुड़ी होने के कारण उनकी कोठी की सीढ़ियों से होकर, छत के रास्ते से हमारी सीढ़ियों से उतरा जा सकता था। उसने वही किया। रातभर एक एक करके अपने नवजात पिल्लों को अपने मुंह में दबाकर पडोसी की सीढ़ियों के रास्ते हमारे बगीचे तक आई। इस धरती के सब से खतरनाक जीव मानव पर इतना भरोसा? मैंने खुद को इतना बौना कभी न पाया था।

हमने एक छोटासा काष्ठ का बेंच जो बाहर ही पड़ा रहता था उसे उठाकर घर की दीवार से सटाकर रखा। उसके नीचे कुछ बस्ते बिछाए तीन तरफ परदे लगाए। इस आवास में सभी पिल्लों को लाया गया। वे अब इसी में रहने लगे। करीब दस दिन बाद जब उनकी आँखें खुली वे अपने इस छोटे से घर से बाहर निकले। कभी कभी बगीचे की हरी हरी घास पर खेलते हुए शोर मचाते रहते। उनकी माँ उन्हें अपलक नेत्रों से निहारती रहती। प्राकृतिक काजल लगी हुई उसकी सुनहरी आँखें अतिसुंदर दिख रही थी। उसके चेहरे पर लावण्य की ऐसी झलक मैने कभी नहीं देखी। रातभर वह इस घर के सामने पहरा देती रहती। मूक प्राणी के मातृत्व का श्रेष्ठ उदाहरण मेरे सामने था। पिल्लों को स्तनपान कराते हुए उसके चेहरे पर मुझे जो लालिमा नज़र आई मैंने इस प्यारी दुलारी माँ का नाम रखा लाली। मुझे नहीं पता था उसके मालिक उसे क्या कहकर पुकारते थे। साथ ही पिल्लों के नाम भी रखे गए। मोटू, छोटू, महारानी, कालू, चीनी और सुंदरी।

कुछ दिन और बीत गए। पिल्लों को माँ का दूध कम पड़ने लगा। एक दिन मैंने बड़ी सी थाली में दूध डाला और थाली उनके सामने रख दी। मैंने देखा लाली ने उठकर दूध पीना शुरु किया। कुछ ही पल में पिल्लों ने उसका अनुकरण करना शुरु किया। लाली तुरंत रुक गई। ओह वह अपनी संतानों को थाली में से खाने का तरीका सिखा रही थी। अद्भुत ! धीरे धीरे वे रोटी और अन्य खाद्य खाना भी सीखने लगे। लाली और उसकी संतानें अब हमारे परिवार का हिस्सा बन चुके थे। दफ़्तर से लौटते ही मैं कोठी की सीढियों पर बैठ जाती। सभी पिल्ले आकर मुझे घेर लेते। मस्ती का एक माहौल बन

जाता । मैं जैसे एक अलग ही दुनिया में पहुंच गई थी । जहाँ खुशियाँ ही खुशियाँ थी । पर खुशियाँ तो जीवन सागर के किनारे लहरों की तरह आती जाती रहती हैं कहीं ठहरती नहीं । अचानक छोटू और सुंदरी बीमार हो गए। उनका खाना भी कम हो चला था । उन्हें डिस्टेम्पर नामक बीमारी हुई थी जो अक्सर पशु पक्षियों में देखी जाती है । पिल्ले या चूज़ों के लिए वह घातक होती है । सोहम ने तुरंत ही उनका इलाज शुरु करवाया पर होनी को कौन टाल सका है ? कुछ ही दिनों में दोनों की मौत हो गई । मन जैसे रिक्त हो गया । मैं बार-बार लाली को देखती । उसके चेहरे पर मुझे विषाद की गहरी छाया नज़र आती । एकाध सप्ताह के बाद कालू और चीनी अस्वस्थ हो गए । वे भी चल बसे । माहौल बडा ग़मग़ीन हो गया । मेरी खुशियाँ एक-एक कदम दूर जाने लगी । सभी ने चुप्पी साध ली । अब बारी थी महारानी की । मेरे पति महोदय पार्थ ने यह नाम रखा था । क्योंकि वह सचमुच बड़ी खूबसूरत थी । उसका सौंदर्य किसी राजकुमारी सा था । कुछ ही दिनों में हमारी चहेती महारानी भी हमें छोड़कर चल दी । हमारी आखिरी उम्मीद थी मोटू । वह पहले से ही थोड़ी मोटी थी । इसीलिए उसका नाम मोटू रखा गया था । वह भी जब थोड़ी सी अस्वस्थ दिखने लगी । सोहम ने कहा माँ यह बस कुछ ही दिन की मेहमान है । मैं खुद को बड़ा असहाय महसूस करने लगी । मैंने सुना था कि गर अंतर्मन से प्रार्थना की जाए तो ज़रुर कबूल होती है । मोटू को दवा से ज्यादा दुआओं की जरुरत थी । सोहम चिकित्सा करवा रहा था । मैं कभी सोहम को कभी लाली के चेहरे को देखती रहती । दोनों के रंगहीन चेहरे मेरी अंतरात्मा को झकझोरने लगे । मैंने अंतर्मन से प्रार्थना की । जैसे चमत्कार हुआ, मोटू स्वस्थ हो गई । हमारी लाड़ली माँ लाली की एक संतान को बचाने में हम कामयाब हुए ।

समय अपने तरीके से बीत रहा था । मैं लाली और मोटू से सीख रही थी माँ और बेटी के रिश्ते की गहराईयाँ । माँ का स्नेह अदभुत था या बेटी का प्यार निराला था यह तय करना मुश्किल था । समय बीतता चला । दोनों हमारे परिवार के सदस्य बन चुके थे । देखते ही देखते कब नौ वर्ष बीत गए पता ही न चला । बेटा सोहम अपनी पढ़ाई पूर्ण होते ही चेन्नई स्थित मद्रास क्रोकोडाइल बैंक ट्रस्ट में कार्यरत हो गया । इक्कीस जून २००८ को उसका

विवाह भी हो गया । कुछ ही दिनों में बहू आकांक्षा भी चेन्नई चली गई । घर में हम पति-पत्नी और मोटू-लाली रह गए । ये दोनों हमारे अकेलेपन का सहारा बन चुके थे । एक दिन अचानक मैंने देखा कि लाली खाना ठीक से नहीं खा रही थी । दो-तीन दिनों में ही उसने खाना बिलकुल बंद कर दिया । हमने सोहम से बात की । हम उसे डॉक्टर टीना के पास ले गए । पता चला उसके दोनों गुर्दे खराब हो चुके थे । अबकी बार जो बीमार हुई लाली हम उसे बचा नहीं सके । मृत्यु एक प्राकृतिक घटना है । प्राणी हो या मानव सब को एक न एक दिन मौत के आगोश में समा जाना है । पर लाली से मेरा भावनात्मक लगाव इतना गहरा था कि मैं उसकी मौत को स्वीकार नहीं कर पा रही थी । उसके साथ किए गए अन्याय का अपराधबोध इस कदर हावी हो रहा था कि मैं खुद को क्षमा नहीं कर पा रही थी । मैं उसके सिरहाने बैठकर उसके सिर पर हाथ फेरने लगी । वो नज़र उठाकर कभी मुझे देखती फिर आंखे मूंद लेती । वही करुणा आज भी उसकी आँखों में दिखी । उस दिन मैं कितना रोयी मुझे याद नहीं पर याद है रोते रोते मैं अविरत एक ही पंक्ति दोहरा रही थी । मुझे माफ कर दो लाली मुझे माफ कर दो । उसी रात को वह हमें छोड़कर चली गई ।

कोई मनुष्य जब किसी से अपना गुस्सा जताने के लिए कुत्ता कहकर संबोधित करता है तो मुझे उस मनुष्य से यह कहने को मन करता है हर मनुष्य में अगर श्वान की वफादारी होती तो यह धरती स्वर्ग न बन जाती ? जाते जाते लाली मुझे जीवन का फलसफा सिखाकर गई ।

हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है ।
- महात्मा गांधी

आओ बसंत आओ

मल्लिका मुखर्जी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)

माघ महीना, शुक्ल पंचमी, आओ बसंत आओ,
रंग नए नयनों में भर दो, कोई गीत सुनाओ !
डोल रही ना मत मंजरी, नहीं कूकती कोयल,
स्वागत कैसे करूं तुम्हारा सोच रही मैं हर पल ।
मन के द्वारे मत ठहरो तुम, आगे कदम बढ़ाओ ।
हरी पत्तियाँ काँप रही हैं, शाख ही न कट जाए,
झाँक रही हैं नई कोपलें कैसे जान बचाएँ ?
आशाओं के वन उपवन में, फूलों से खिल जाओ ।
ना हँसते फूलों की बगियाँ और तरुओं की छाया,
खेत कहाँ है लहराते, बस महानगर की माया ।
कसम तुम्हें पीली सरसों की एक बार मुस्काओ ।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता ।

– डॉ. राजेंद्र प्रसाद

गर्व करो ! आप सरकार में हैं ।

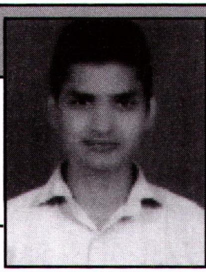

मनीष मंगल

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सरकारी सेवक की शक्तियाँ, जिम्मेदारियाँ एवं सुविधायें - एक सरकारी सेवक की कलम से ।

आज फिर मैं आईने के सामने खड़ा था और आईने में से मेरे ही प्रतिबिंब को कहते हुए महसूस किया, "गर्व करो ! आप सरकार में हैं ।" अनायास ही बीते हुए कुछ क्षण जीवंत हो उठे ।

१. कॉलेज के स्वछंद दिन, समाज और देश को चलाने वालों की आलोचना एवं बदलने की सोच वाली बातें, कॉर्पोरेट जीवन बनाम सरकारी सेवा वाले संवाद, ऐसी ही कई सारी बातें एक साथ दिमाग में घूम गई । कॉलेज खत्म, कुछ दोस्त कॉर्पोरेट में, कुछ व्यापार में और कुछ सरकारी सेवा में चले गये । मैंने सरकारी सेवा चुनी । दोस्त आज भी पूछ लेते हैं कि भाई खुश तो हो ना सरकारी सेवा में ? आज के इस मंहगाई के युग में तुम कैसे गुज़ारा करते हो सरकारी नौकरी में रहते हुए ? कहीं ईमानदारी धुआँ-धुआँ तो नहीं हो गई ?

घुमा-फिरा कर प्रश्न यही होता है कि क्या तुम्हें अपनी सरकारी सेवा पर गर्व है ?

२. २०१८ मानसून की अहमदाबाद की पहली मूसलाधार बारिश । सभी गली, सड़कों पर घुटनों तक पानी का भराव । हर जगह यही सुनने को मिला कि पहली ही बारिश में अहमदाबाद नगर निगम की पोल खुल गई, नगर निगम वाले सरकारी कर्मचारियों ने अपना काम ठीक से नहीं किया इत्यादि इत्यादि ।

तब भी प्रश्न यही था कि क्या तुम्हें अपनी सरकारी सेवा पर गर्व है ?

३. चाहे रोड के खड्डों को देख लो, चाहे काला बाज़ारी करने वालों को देख लो, चाहे कर चोरी करने वालों को देख लो, चाहे बेतरतीब तरीके से हो रहे अतिक्रमण, ट्रैफिक अव्यवस्था को देख लो, आम आदमी किसी न किसी

सरकारी ऑफिस की नाकामी को गिना ही देता है (स्वयं को ही लें तो हम भी तो यही करते हैं) ।

तब भी प्रश्न यही होता है कि क्या तुम्हें अपनी सरकारी सेवा पर गर्व है ?

४. कई बार कॉर्पोरेट में अच्छे पैकेज पर कार्यरत दोस्तों द्वारा हँसी मज़ाक में चिढ़ाते हुए कम वेतन पर चुटकी लेते हुए पूछे जाने पर भी अनायास ही ये महसूस हो ही जाता है कि - क्या तुम्हें अपनी सरकारी सेवा पर गर्व है ?

फिर एक वो दिन भी आया जब इन सब बातों का जवाब पता करने की ठानी । बैठ गए हम सरकारी कर्मचारी को मिलने वाली सुविधाओं और जिम्मेदारियों की एक लिस्ट बनाने, ये पता करने कि हमें मिलने वाली सुविधाओं की सूची में कुछ है भी या नही । जरा उस लिस्ट पर आप भी नज़र डालें....

सुविधाएं..

- समय पर हर महीने वेतन (महंगाई बढ़ने पर वेतन में बढ़ोतरी)
- छुट्टियां (आकस्मिक अवकाश, बीमारी अवकाश, अर्जित अवकाश एवं अन्य कई परिस्थिति जन्य अवकाश)
- अवकाश यात्रा रियायत (गृह यात्रा रियायत भत्ता, भारत भ्रमण इत्यादि)
- आवास सुविधा
- बच्चों के लिए शिक्षण भत्ता (अधिकतम दो बच्चे)
- पारिवारिक पेंशन एवं ग्रेच्युटी (एन.पी.एस. पर भी लागू है)
- स्वास्थ्य और मेडिकल लाभ, स्वयं एवं आश्रित परिवारजनों के लिए (आजीवन)
- अधिकांश कार्यालयों में शनिवार एवं रविवार का अवकाश (कुछ कार्यालयों में माह में दो बार) जिससे नयी जगहों पर घूमने के कई अवसर ।
- अधिकांश कार्यालयों में सब्सिडाइज्ड कैंटीन
- विविध- कई अन्य तरह के भत्ते जैसे की न्यूजपेपर भत्ता, ड्रेस भत्ता, मानदेय, ब्रीफकेस भत्ता, टेलीफोन भत्ता इत्यादि (जैसी स्थिति हो)
- संशोधित आश्वासन कैरियर प्रगति योजना

ज़िम्मेदारियाँ....

- ईमानदारी से अपने कार्यालय के कर्तव्यों को निभाना
- अपने भारत के नागरिक होने के नाते मूल कर्तव्य

आपका तो पता नहीं पर मुझे ज़रुर एक बार तो गर्व महसूस हुआ कि मैं सरकार में हूँ। अंदर से आवाज़ सी आयी थी गर्व करो ! आप सरकार में हैं। हम में से हर एक को पता होता है कि सरकारी कर्मचारी को मिलने वाली सुविधाओं और ज़िम्मेदारियों में से किस बात का पलड़ा भारी है।

अब बात करते हैं सरकारी कर्मचारी की कुछ शक्तियों की। यकीन मानिए एक सरकारी कर्मचारी होने के नाते हमें कई सारी शक्तियाँ भी प्राप्त हैं। एक सड़क किनारे खड़ा ट्रैफिक हवलदार एक अरबपति की गाड़ी को हाथ दिखा कर रोक सकता है (पूछताछ के लिए), चालान बना सकता है (निस्संदेह गलत पाये जाने पर), एक इंस्पेक्टर (पुलिस, इन्कम टैक्स, कस्टम इत्यादि) कहीं भी इन्सपेक्शन हेतु जा सकते हैं, एक लेखा-परीक्षक कई सरकारी एवं प्राईवेट संस्थाओं का ऑडिट कर सकता है, चाहे एम्स के सरकारी डॉक्टर हों, चाहे आईआईटी के प्रोफेसर, चाहे देश को चलाने वाले नीति निर्धारक हो, चाहे गली-मोहल्ले में नगर निगम के सफाई कर्मचारी, ये सभी सरकारी हैं। इनमें से किसी एक के भी काम बंद कर देने पर या कहें अपने ऊपर गर्व करना बंद कर देने पर क्या ये तंत्र सुचारु रूप से चल पाएगा ? विचार अवश्य करें।

आज एक संस्मरण मैं जरुर बताना चाहूँगा, घर से कार्यालय तक की दूरी ऑटो से तय करने के बीच कुछ बातें ऑटो वाले भाई से हुई। बातों ही बातों में उसने जाना कि मैं सरकारी ऑडिट विभाग में काम करता हूँ। साहब, आप यकीन करें न करें उसने एक बात ऐसी बोली जो दिल की गहराई में उतर गयी थी।

भला हो उसका जिसने ऑडिट डिपार्टमेन्ट बनाया, आम आदमी आज भी उम्मीद करता है कि इसकी रिपोर्ट के डर से सभी सरकारी विभाग नियमों में रह कर काम करते हैं। आप ऑडिट में हैं, ऑडिट करते हैं, आप सचमुच में हमारे लिए सरकार हैं।

शायद ये बात मेरे लिए कोई भी आम आदमी नहीं बोलता अगर मैं किसी प्राईवेट संस्था में होता।

उस दिन मेरे मन में ये बात रह रह कर हिलोरें ले रही थी
गर्व करो ! आप सरकार में हैं।

• • •

देश सेवा

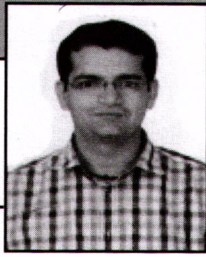

मयंक मिश्रा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

देश सेवा शब्द सुनते ही हमारे मन में कुछ इस तरह के विचार आते हैं कि कोई सैनिक देश की सरहद पर भीषण गर्मी अथवा सर्दी में कंधे पर बंदूक लिए जान को दाँव पर लगाये पहरा दे रहा है। या फिर हम सोचते हैं कि आजादी से पहले के समय में क्रांतिकारी अपनी जान पर खेल कर देश को आजाद करवाने के लिए डटे हुए हैं। निश्चित ही यह एक बहुत उच्च दर्जे की देश सेवा है, परन्तु इस तरह देश सेवा करने का सौभाग्य हर किसी को प्राप्त नहीं हो सकता। हम फौज में नहीं हैं तो सरहद पर जान नहीं दे सकते। देश स्वतंत्र हो गया तो आजादी के लिए भी जान नहीं दे सकते।

तो क्या आज हम देश सेवा कर ही नहीं सकते ? इस का उत्तर है, निश्चित तौर पर कर सकते हैं। जहां पर हैं, जो भी कर रहे हैं उसके साथ ही देश सेवा कर सकते हैं। देश सेवा सिर्फ अपनी जान दे कर अथवा जान को खतरे में डाल कर ही नहीं की जा सकती है बल्कि अपने जीवन में छोटे छोटे परिवर्तन लाकर भी हम देश, समाज और परिवार की प्रगति में सहयोग कर सकते हैं। इस प्रकार के कुछ उदाहरण निम्न हैं।

– महिलाओं को सम्मान दें, इस बात पर विशेष ध्यान दें कि कम से कम आपकी वजह से कहीं भी कोई महिला असहज महसूस न करे। इस बात को समझें कि देश में लगभग आधी जनसंख्या महिलाओं की है एवं यदि महिलाएं भी पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर चलेंगी तो देश की प्रगति की रफतार स्वतः दोगुनी हो जाएगी। इसके लिए आवश्यक है कि महिलाओं को सोचने समझने और स्वतंत्र रूप से काम करने के लिए खुला माहौल मिले।

– यातायात नियमों का पालन करें, कहा भी गया है दुर्घटना से देरी भली कुछ मिनट का समय बचाने के लिए वाहन तेज न चलायें न ही यातायात नियमों की अनदेखी करें। याद रखें एक दुर्घटना आपके एवं आपके परिवार की प्रगति एवं देश में आपके योगदान पर विराम लगा सकती है। यातायात नियमों का पालन

करने से एक तो हम सुरक्षित रहते हुए अपने परिवार व देश की सेवा अच्छे से कर पायेंगे दूसरे यदि हम सब यातायात नियमों का पालन करने लगें तो शहर में जाम की समस्या बहुत कम हो जायेगी, जो प्रदूषण कम करने में भी सहायक होगा ।

– पर्यावरण संरक्षण में योगदान करें, ईंधन की बचत करें, वर्ष में कम से कम एक पौधा लगायें एवं कुछ महीने उसका ध्यान रखें । पौलिथीन का प्रयोग कम करें, इसके लिए 3R सिद्धांत (Reuse, Recycled Use, Reduce Use) को भी अमल में ला सकते हैं ।

– अपने आस पास, चाहे आपका कार्यालय हो, घर हो या समाज का अन्य कोई स्थान, साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें । इस बात को सुनिश्चित करें कि कम से कम आपकी वजह से तो गन्दगी न हो ।

– भोजन की बर्बादी न करें । ध्यान रखें एक किसान सर्दी, गर्मी, बरसात की परवाह किए बिना साल भर मेहनत करता है, तब हमारे घर तक भोजन पहुंचता है । आज भी लाखों लोग भूखे पेट सोते हैं, ऐसे में हम अगर भोजन को बर्बाद न करें तो यही बचा हुआ भोजन अप्रत्यक्ष रूप से गरीब लोगों तक पहुंच ही जायेगा यह भी देश सेवा से कम महान कार्य नहीं होगा ।

– अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें ''प्रथम सुख निरोगी काया'' अंग्रेजी में भी कहावत हैं One of the best gifts you can give to your family is a fitter you. आप अपने परिवार के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं । स्वस्थ रहते हुए आप कभी अपने परिवार के लिए बोझ नही बनेंगे बल्कि स्वस्थ रह कर आप अपने परिवार एवं समाज की जिम्मेदारियों का भी बेहतर तरीके से निर्वाह कर पायेंगे, चाहे आप किसी भी व्यवसाय में हों इस प्रकार देश की प्रगति में अपना योगदान कर पाएंगे।

– खुश रहें एवं औरों को भी खुश रखें । किसी शायर ने कहा है, 'जुलूस दिल में, जुबां पर मिठास रहने दो । न खुद रहो न किसी को उदास रहने दो ।' खुश रहने से हमारे परिवार एवं कार्यस्थल में खुशनुमा माहौल बनेगा एवं उस माहौल में सभी को मेहनत करने की उर्जा मिलेगी । इस प्रकार आप अपने परिवार एवं देश की प्रगति में सहायक होंगें ।

मस्त रहें, व्यस्त रहें, स्वस्थ रहें एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनें । यदि हम सब अपनी अपनी जगह अपना कर्तव्य जिम्मेदारी के साथ निभाते रहे तो विश्व में ऐसी कोई ताकत नहीं है जो भारत को जल्द ही विकसित राष्ट्र बनने से रोक पाए। अतः जहां है वहीं अपनी तरह से देश की सेवा करते रहिये ।

मानव जीवन में क्षमा दान का महत्व

मुकेश कुमार लाल
वरिष्ठ उप महालेखाकार

मनुष्य अपने दैनिक क्रिया कलापों के निर्वहन में कभी कभी ऐसे कार्य भी करता है जिससे जाने अनजाने किसी अन्य व्यक्ति, समूह अथवा संगठन को शारीरिक, आर्थिक अथवा मानसिक कष्ट पहुंचता है। इस कष्ट के प्रत्युत्तर में पीड़ित पक्ष सदैव बदले की भावना से ग्रसित रहता है। वह हमेशा ही इस प्रयास में तत्पर रहता है कि उसको पहुंचाए गए कष्ट का बदला वह कितनी शीघ्रता से ले सकेगा। परंतु इस प्रकार की नकारात्मकता स्वयं पीड़ित पक्ष को कुंठित करती रहती है। ऐसा करने से उनका क्रोध कम अथवा समाप्त होने के बजाए और बढ़ता ही जाता है। साथ ही हर वो क्षण जिसमें मनुष्य कष्ट देने वाले पक्ष के बारे में सोच कर अपने अनमोल समय को नष्ट करता है, वही अनमोल समय किसी उपयोगी कार्य में भी लगाया जा सकता है। अतः बेहतर होता है कि मनुष्य ऐसी गलतियों को नजरंदाज कर क्षमा का दान करें।

किसी ऐसे व्यक्ति को क्षमा करना जिसने आपके साथ गलत व्यवहार किया हो, वास्तव में एक स्वार्थी व्यवहार है न कि स्वार्थरहित। माफी देकर हम अपने अंदर की शत्रुता और घृणा की भावना से छुटकारा पा जाते हैं और यह क्रिया क्षमा दान पाने वाले से अधिक लाभ हमें देती है। क्षमा दान भावनात्मक और निजी प्रबलता का महान आचरण है। यह एक सबसे अच्छा तरीका है जिसके द्वारा अपने जीवन को ऊंचाईयों तक लाया जा सकता है।

क्षमा दान हमारे अंदर विद्यमान आंतरिक शक्ति का द्योतक है न कि किसी कमज़ोरी का लक्षण। क्षमा कोई साधारण मनुष्य कर ही नहीं सकता है। जो मनुष्य ज्ञानी होगा एवं जिसकी आत्मा शुद्ध व शांत होगी, वास्तव में दूसरे को सिर्फ वही क्षमा कर सकता है। मन में यदि थोड़ी सी भी बदले की भावना शेष हो तो वह क्षमा नहीं कर सकता है। जैसे यदि किसी बलवान मनुष्य ने किसी दुर्बल मनुष्य

की पिटाई कर दी है तब दुर्बल मनुष्य माफ नहीं करता है, वरन् वह अपनी शारीरिक कमज़ोरी की वजह से चुप रहता है अथवा बदला लेने के अन्य उपायों व अवसरों की तलाश में रहता है ।

क्षमा दान के सन्दर्भ में प्रसिद्ध कवि रहीमदास जी का बहुत प्रचलित दोहा है । क्षमा बड़न को चाहिये, छोटन को उत्पात । का रहीम हरी का घट्यो, जो भृगु मारी लात । अर्थात उद्दंडता करने वाले हमेशा छोटे कहलाते हैं और क्षमा करने वाले ही बड़े बनते हैं । ऋषि भृगु ने भगवान विष्णु की सहिष्णुता की परीक्षा लेने के लिए उनके वक्ष पर जोर से लात मारी, मगर क्षमावान भगवान ने नम्रतापूर्वक उनसे ही पूछा अरे आपके पैर में चोट तो नहीं लगी ? क्योंकि मेरा वक्षस्थल कठोर है और आपके चरण बहुत कोमल हैं । भृगु महाराज ने क्रोध करके स्वयं को छोटा प्रमाणित कर दिया जबकि विष्णु भगवान क्षमा करके और भी बड़े हो गए ।

बुद्ध ने भी सदैव अपने शिष्यों एवं उपासकों को क्षमा दान की सीख दी है। बुद्ध ने स्वयं उन सबको क्षमा दान दिया है जो उनकी निंदा अथवा उन्हें अपमानित किया करते थे । पुनः बुद्ध ने सदैव उनकी प्रशंसा की है जो प्रतिक्रिया स्वरुप प्रत्युतर तो दे सकते थे पर नहीं दिया और न ही प्रतिक्रिया व्यक्त की ।

महावीर ने भी क्षमा याचना से क्षमा दान को अधिक महत्वपूर्ण माना है महावीर ने कहा था कि मैं समस्त जीवों को क्षमा करता हूँ सब जीव मुझे क्षमा करें सब जीवों से मेरे मैत्री भाव हैं किसी से बैरभाव नहीं ।

क्षमादान के महत्व को हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भी रेखांकित किया था, वह कहा करते थे कि "यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो तुम दूसरा गाल भी आगे कर दो ।" क्षमा दान के सन्दर्भ में राष्ट्रपिता का यह अनूठा प्रयोग आज के वर्तमान तनाव पूर्ण जीवन में भी अधिकाधिक प्रासंगिक है ।

क्षमादान का महत्व मानव जीवन के हर मोड़ पर, हर संबंध में है। चाहे बचपन की बात हो, दांपत्य जीवन की अथवा मित्रों के बीच आज क्षमा दान की आवश्यकता चहुं ओर है । जब तक हम क्षमावान नहीं बनते तब तक हम अंदर ही अंदर घुटते हैं, घुटन से तनाव होता है और यह तनाव ही समस्त बीमारियों की जड़ है । साथ ही यह हमारी शक्ति, उत्साह और मन की शांति सब को निचोड़ लेती है । इसीलिए बेहतर है कि ऐसी नकारात्मक सोच का यथाशीघ्र परित्याग करें । इससे जीवन से क्रोध का अंत हो जाता है और व्यक्ति अपने जीवन में आगे बढ़ सकते हैं।

जन्मदिन

श्रीमती मोनिका दवे
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

इस वर्ष मेरे जन्मदिन पर देर रात जब माँ का फ़ोन आया तो आवाज़ में एक अजीब सी चिंता के साथ उन्होंने प्रश्न किया, ''बेटा सब ठीक है न ?'' खुशी के मौके पर उनके इस प्रश्न से मैं हैरान थी। पूछने पर माँ ने मासूमियत से जवाब दिया, ''बेटा जन्मदिन पर परिवार के साथ केक काटते हुए, किसी अच्छे रेस्तरां में जन्मदिन मनाते हुए कोई भी पिक्चर तुमने फेमिली ग्रुप में या स्टेटस अपडेट पे नहीं डाली, इसलिए थोड़ी चिंता हो गई कि सब ठीक तो है न ?''

मैं ठहाका लगाकर हंस पड़ी और मां को आश्वस्त किया कि मैं सकुशल हूँ। लेकिन फ़ोन रखने के बाद मन में ये सवाल लगातार बना रहा कि जीवन में खुश रहना ज़्यादा ज़रुरी है या हम खुश हैं इस बात का आश्वासन सोशल मीडिया पोस्ट के द्वारा सभी को देना भी अब उतना ही ज़रुरी है। अपनी खुशी नापने का ये पैमाना शायद पिछले कुछ वर्षो में खुद ब खुद हमारे सोशल मीडिया व्यवहार से जुड़ गया।

मेरे बचपन के सब जन्मदिन एक एक करके मेरे ज़हन में आने लगे। नए कपड़े, कुछ खिलौने, मां के हाथ का स्वादिष्ट मनपसंद खाना, घर में पूजा पाठ और शिमला की सर्द जनवरी में, अगर मौसम साथ दे तो, काली बाड़ी मंदिर दर्शन के लिए जाना। एक और ख़ास बात जो जन्म दिन को विशेष बनाती थी वो थी इस दिन पर सभी स्वजनों का विशेष रुप से आत्मीय व्यवहार। दिन में दस बार चिढ़ाने और सताने वाले भाई-बहन, इस दिन ख़ास ख्याल रखते कि उनकी किसी भी शरारत से मेरा दिल न दुखे। माँ भी रसोई में मेरी ही पसंद का कुछ ख़ास बनाती, पापा के स्नेह का अधिकांश हिस्सा उस दिन मुझे ही मिलता।

फिर ज्यों-ज्यों थोड़ा और बड़े हुए तो दोस्त भी इस अवसर पर शामिल

होने लगे । घर पर माँ के हाथ का खाना ही अब सभी दोस्तों के लिए भी बनता । खुद हाथों से बनाये गए ग्रीटिंग कार्ड, जिनमें से कुछ तो मैंने आज तक सहेज कर रखे हैं, दोस्तों द्वारा निश्छल भाव और निर्मल मन से दिये वो स्नेह भरे छोटे-छोटे तोहफ़े, जन्मदिन के अवसर पर दोस्तों और परिजनों द्वारा लिखी कुछ कवितायें इत्यादि आज भी अपने प्रियजनों के लिए इतना विशेष होने का सुखद अनुभव करवाते हैं ।

वर्तमान समय से उस समय की तुलना करने लगी तो पाया कि धीरे-धीरे सब कुछ कितना बदल गया और पिछले पाँच सालों में तो स्मार्ट फ़ोन और सोशल मीडिया ने जन्मदिन की हमारी परिभाषा ही, हमारी जानकारी के बिना, धीरे धीरे इतनी बदल दी कि माँ को भी जन्मदिन के फ़ोटो न दिखने पर मेरी कुशलता सुनिश्चित करने के लिए फ़ोन करना पडा । माँ ही नहीं, दोस्त, सहकर्मी, पड़ोसी, रिश्तेदार सभी माँ की ही तरह जन्मदिन की फोटो के आधार पर मेरे जीवन के सामान्य या अन्यथा होने का अंदाज़ा लगा रहे होंगे ।

पिछले कुछ सालों में जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया है । इंटरनेट के माध्यम से हम अधिकाधिक लोगों से जुड़े हैं पर रिश्तों में वो गर्मजोशी और बात करने के वो नर्म लहज़े शायद अब नहीं रहे । जन्मदिन पर व्यक्तिगत रूप से मिल कर बधाई देना अब लगभग समाप्त हो चला है । जब किसी के द्वारा अग्रेषित संदेश को मात्र एक क्षण का समय लेकर आगे भेजने की सुविधा उपलब्ध हो तो कुछ कदम चल कर भी मिलने की ज़हमत क्यों उठायी जाए, यह सोच अब बड़ी आम है । जन्मदिन की बधाई देना अब औपचारिकता बन कर रह गयी है । लोग भी अब यह अपेक्षा नहीं रखते कि कोई मिलकर जन्मदिन की बधाई दे ।

हमारे जीवन और सोच में यह बदलाव इतना दबे पांव आया कि हम इस बदलाव के प्रभाव को जान भी न सके । जाने अनजाने हम दूसरों के खुश या दुखी होने का आकलन जन्मदिन कहां और कैसे मनाया जैसे मापदंडों से करने लगे । बचपन के उन जन्मदिनों में सामाजिक दायित्व निभाते कीमती तोहफ़े और व्यावहारिक औपचारिकता दर्शाती बधाइयां नहीं थीं । बचपन के उन ख़ास जन्मदिनों को शिद्दत से याद करते हुये मैं जैसे टाईम मशीन से बरसों पहले के शिमला में पहुंच गई थी कि फ़ोन के 'मैसेज बीप' से मेरी तंद्रा टूटी । कुछ नए संदेश और 'स्टेटस अपडेट' मेरा इंतज़ार कर रहे थे । मैंने मुस्कुराते हुए खुद को याद दिलाया ये वर्चुअल वर्ल्ड है रियल नहीं....

आज

नकुल शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कल कल कर के वक्त, अपना तू मत निकाल
कल के धागों से तू, मत बुन आज के शाल,
आज को अपना ले बस, इसमें ही है सभी कमाल
समय की प्रत्यंचा पे, बस आज के बाण निकाल ।

आज के पल से ही हैं बनते, दिन महीने और साल
जीवन बनता है इन्हीं पलों से, बुन ले खुशियों के जाल,
क्या है आगे और क्या है पीछे ना तू बही संभाल
समय की प्रत्यंचा पे, बस आज के बाण निकाल ।

चुन ले तू आज के मोती, बेहतर कर ले अपने हाल
समय अपनी चाल है चलता, तू भी चल बस अपनी चाल,
इस पल की इज्जत कर, रख हमेशा इसका खयाल
समय की प्रत्यंचा पे, बस आज के बाण निकाल ।

हिंदी पखवाड़े में सभा को सम्बोधित करती हुई
मुख्य अतिथि श्रीमती रंजना अरगड़े जी....

१५ अगस्त समारोह में अच्छे अंक प्राप्त करने वाले
स्टाफ सदस्यों के बच्चों को पुरस्कृत करती हुई

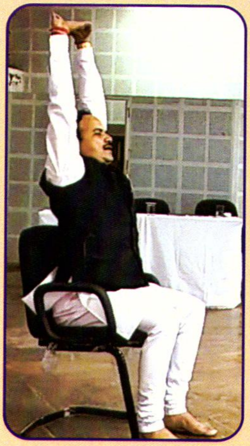

न्यूरोपेथी वर्कशॉप में भाग लेते कार्यालय सदस्य....

१५ अगस्त के दिन पंजाबी नृत्य प्रस्तुत करती हुई
सुश्री नंदिनी गर्ग....

यह भारत में हुआ (इट हैपंड इन इंडिया)

नकुल शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एकबार मैं घूमने के लिए सिंगापुर गया था। सिंगापुर सभी मामलों में विकास का प्रतीक है, एक स्तर पर ऐसा लगता है कि पूरा शहर स्वचालित मोड पर चल रहा है। जैसे कि किसी ने एक बटन दबा डाला है और शहर बस अपने आप चल रहा है। यह विकास और राज्य प्रबंधन पर वैश्विक केस स्टडी है। इसकी सड़कें, बुनियादी ढांचा, यातायात प्रबंधन, सार्वजनिक परिवहन इत्यादि सभी विश्व स्तरीय हैं, सामान्य तर्क दिया जाता है कि यह एक छोटा शहर-राज्य है जिसको प्रबंधित करना आसान है, लेकिन यह दुनिया का एकमात्र शहर-राज्य नहीं है। क्या भारत में ऐसा विकास किसी भी क्षेत्र में हासिल किया जा सकता है, इसका सीधा जवाब नहीं है। हमारे विकसित ना होने का सामान्य कारण; देश का आकार, इसकी आबादी, शिक्षा की कमी और भ्रष्टाचार को बताया जाता है। लेकिन आश्चर्य की बात है कि उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर 'हाँ' है, और इस देश के आकार, इसकी आबादी, शिक्षा की कमी और भ्रष्टाचार के बावजूद भी पहले से ही भारत में अंतरराष्ट्रीय स्तर की पब्लिक ट्रांसपोर्ट प्रणाली है। मैं आपको बताता हूँ कि कैसे और कहाँ। मैंने अपने दौरे का आखिरी दिन स्थानीय दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के लिए पूरी तरह से खाली रखा और उस दिन मैंने सिंगापुर मेट्रो के माध्यम से कुछ स्थानों का दौरा किया और मुझे आश्चर्य हुआ कि हमारे पास दिल्ली में विश्व-स्तरीय मेट्रो है। मुझे पहले से ही पता था कि दिल्ली मेट्रो बहुत अच्छा है, लेकिन जब मैंने इसकी तुलना दुनिया में सर्वश्रेष्ठ के साथ की तो मैं पूरी तरह से हैरान था। यह भारत में कैसे हुआ। मैंने इंटरनेट पर इसके बारे में खोजना शुरु कर दिया और मैंने पाया कि यह एक आदमी, उसकी दृष्टि और अदम्य भावना के कारण हुआ था। जिस आदमी के बारे में मैं बात कर रहा हूं वह हैं, ई श्रीधरन। मैंने उनकी जीवनी पढ़ी और उनके द्वारा दिए गए कुछ साक्षात्कारों के माध्यम

से जाना और मुझे नीचे उल्लिखित बिंदु मिले कि भारत में विश्व स्तरीय मेट्रो कैसे बना ।

१. दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) श्री श्रीधरन द्वारा बिल्कुल शून्य से आरंभ किया गया था । उन्होंने भारतीय रेलवे में अपने विशाल अनुभव के कारण भारतीय रेलवे से कुछ चुने हुए कर्मचारियों को दिल्ली मेट्रो रेल निगम में पदस्थापित करवाया । उन्होंने प्रति किलोमीटर ३२ कर्मचारियों का अनुपात बनाए रखा जो एक अंतरराष्ट्रीय मानक है । अपनी टीम की स्थापना करते समय उन्हें काफी स्वतंत्रता दी गई ।

२. उन्होंने काम अनुबंध के कई मौजूदा मानकों और प्रक्रियाओं को बदल दिया । मिनी माथुर को दिए गए साक्षात्कार में उन्होंने एक आश्चर्यचकित करने वाली बात कही । उन्होंने मापन पुस्तक (मेजरमेंट बुक) को बदल दिया क्योंकि उन्हें लगता है कि यह भ्रष्टाचार का मूल कारण है ।

३. उन्होंने भूमि अधिग्रहण को एक कला में परिवर्तित कर दिया लेकिन यह कहीं भी नहीं लिखा गया कि उन्होंने यह कैसे किया ।

४. उन्होंने दिन में आठ घंटे से अधिक समय कभी काम नहीं किया, और कभी भी कोई फाईल कार्य हेतु घर वापस नहीं ले गए ।

जितना अधिक मैंने उनके बारे में और उनके द्वारा की गयी परियोजनाओं के बारे में पढ़ा, उतना ही उन्होंने आश्चर्यचकित किया । दिल्ली मेट्रो का कार्यभार लेने से पहले उन्होंने कोंकण रेलवे का कार्यभार संभाला था । कोंकण रेलवे भारत की वाणिज्यिक राजधानी, मुंबई और मैंगलोर के बीच लापता लिंक था । ७४१ किलोमीटर की दूरी महाराष्ट्र, गोवा और कर्नाटक राज्यों को जोड़ती है – क्रिस–क्रोस नदियों का एक क्षेत्र, जिसमें घाटियों और पहाड़ों का एक दुर्गम समन्वय है । १९ जुलाई, १९९० को कोंकण रेलवे कोर्पोरेशन लिमिटेड (केआरसीएल) को कंपनी अधिनियम, १९५६ के तहत सार्वजनिक लिमिटेड कंपनी के रूप में स्थापित किया गया था । पहली बार, भारत सरकार रेलवे परियोजनाओं को नियंत्रित करने की अपनी नीति से बाहर निकल आई थी । श्रीमान श्रीधरन को अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक के रूप में पदस्थापित किया गया । स्वायत्त निगम में महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक और केरल इन चार लाभार्थी

प्रांतो को पार्टनर बनाया गया। निगम के बनने के बाद भी इस परियोजना का बनना एक असंभव कार्य था। प्रारंभिक समस्या इतने मुश्किल इलाके का सर्वेक्षण करना था। श्रीधरन जी के मार्गदर्शन में श्री राजाराम, जो गोवा में मुख्य अभियंता थे और बाद में के.आर.सी.एल. के प्रबंध निदेशक बने, ने उपग्रह छवियों को लिया, उच्च सटीकता वाले भौगोलिक मानचित्र बनाये और फिर रेलवे के इतिहास में पहली बार मोटर साइकिलों पर टीमों को बाहर भेजा गया। उन्होंने राज्य के चारों ओर लेवलिंग उपकरणों जैसे उपकरणों को ले जाने के लिए, ताज़ा इंजीनियरिंग डिप्लोमा प्राप्त युवा लड़कों को किराए पर कई कावासाकी बाईक लेने का आदेश दिया। उन्हें रु १०० प्रतिदिन और पेट्रोल देने का प्रावधान रखा गया। जब तक कि वे हर दिन एक निश्चित मात्रा में काम करते थे, उनकी किसी के प्रति कोई जवाबदारी नहीं थी। निश्चित रुप से उनके द्वारा निर्धारित लक्ष्य का मतलब था कि उन्हें दिन में १४ घंटे काम करना होगा। नवाचार का इस तरह का स्तर अभूतपूर्व था। हालांकि इस परियोजना का पूरा होना एक लम्बी कहानी है, परन्तु श्री श्रीधरन वास्तविक अर्थ में एक सच्चे उद्यमी हैं।

जब तक इस देश का राजकाज अपनी भाषा (हिन्दी) में नहीं चलता तब तक हम यह नहीं कह सकते कि इस देश में स्वराज्य है।

- मोरारजी देसाई

सपना - एक किसान का

प्रदीप कुमार
लेखा परीक्षक

जन्मा वो घर में एक किसान के,
दबे थे अरमान जिसके, तले किसी अहसान के,
सपने उसने भी देखे थे पक्के मकान के,
कच्चा है मकान बेशक, सिर ढकने को तरस जाए,
दुआ करे कि ये बादल बरस जाए,
करेगा मेहनत ताकि उसके बच्चे भूखे ना सोएं,
उसने तो देखे दुःख पर उसके बच्चे ना रोएं ।
इस गरीबी में, बेटा-बेटी पालना भी ना आसान था,
दिख रहा लहराता, खेतों में वो तूफान था,
देख भगवान की माया, वो हैरान था,
उसकी हरी भरी फसलों की जगह अब वीरान था ।
बेटी का दहेज, बेटे की पढ़ाई, फिक्र है उनके सम्मान की,
कर्ज़ की मार से लग रही थी बोली उस गिरवी मकान की,
हो गयी उम्र पर विदा न हो सकी, बेटी उस किसान की,
थक गयी वो बैलों की जोड़ी, जो उस किसान की शान थी,
जाने क्यों उसने मन ही मन मरने की ठान ली,
शायद भगवान की मर्जी समझ उसने हार मान ली,
अंत में बस यही कहूँगा
जो बेच देता है भगवान भी, किसान की वो क्या सुनेगा,
कैसे उस लाचार बाप के सपने उसका बेटा बुनेगा ।
बिन पढ़ाई, खा कर दर-दर की ठोकर, वो भी खेती को ही चुनेगा
आखिर ये सिलसिला कब तक चलता रहेगा,
और बेकसूर किसान ऐसे ही मरता रहेगा ।

पूजा नहीं कुछ काम करो

श्रीमती रचना सिंह
उप महालेखाकार

जप–तप करके देख लिया, अब पूजा नहीं कुछ काम करो ।
क्या होगा पूजा वन्दन से, मस्तक पर रोली चंदन से ।
भजन कीर्तन अवलम्बन से, ढोल मंजीरे झांझर बजा ।
माँग रहे किस नन्दन से, पूजा के दिन बीत गए ,
वक्त की कुछ पहचान करो ।

पूजा नहीं कुछ काम करो....

जहाँ जीवन भर रहते हो, उस जग को बंधन कहते हो ।
आखिर स्वर्ग कहाँ तुम्हारा, जिसे सच्चा घर कहते हो ।
जिसका कोई अस्तित्व नहीं, उसको पाने की झूठी आशा में,
मन को मत परेशान करो ।

पूजा नहीं कुछ काम करो....

मत आओ भुलावों में लोगों के, जिन्होंने सदा भरमाया है ।
सब ने विवाह किया लेकिन, नारी को बुरा बताया है ।
नारी बहना, बेटी और माता, नारी ने ही पुरुष बनाया है,
उसका आदर सत्कार करो ।

पूजा नहीं कुछ काम करो....

खोज सका ना अपने अन्दर, वह मंदिर में क्या पाएगा ।
खुद को बड़ा समझने वाला, क्या भक्त कभी बन पाएगा ।
सबसे बड़ा पुजारी श्रमिक, जो जुटा खेत खलियानों में,
उसके श्रम का सम्मान करो ।

पूजा नहीं कुछ काम करो....

जल

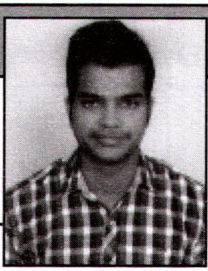

राहुल मित्तल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हमसे ही तो कल होगा,
हम होंगे, जब जल होगा ।
अगर ऐसा एक दिन आया,
जब कहीं ना हमने जल पाया ।
उस दिन जग में बेशकीमती रत्नों का मूल्य नहीं होगा,
और धरा पर जीवन के लिए कोई आधार नहीं होगा ।
जल से धरा अलंकृत है,
सुसज्जित और सुशोभित है ।
जल ही है वो अमृत जिससे प्राण-तार भी झंकृत है,
विश्व चेतना की चिंगारी हमें प्रज्ज्वलित करना है,
जल से हम संरक्षित है,
अब हमें जल संरक्षण करना है ।

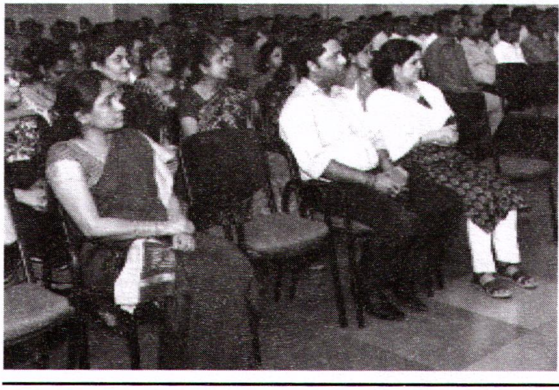

हिंदी पखवाड़े के दौरान उपस्थित सभ्यजन....

संत एवं समाज

रमेशचन्द्र शर्मा ''चन्द्र''

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, सेवा निवृत्त

संत छल–कपट रहित निष्कलुष एवं सरल हृदय होते हैं। उनका जीवन पवित्र एवं सहज होता है। वे संसार के कल्याण के लिए जीवन जीते हैं। अतएव उनका जीवन प्रेरणादायक होता है। वे उपदेश अलंकारिक भाषा में नहीं देते। उनकी भाषा अनगढ़, अटपटी भी हो सकती है। उनके शब्द सुनने में साधारण किन्तु असाधारण प्रभाव डालने वाले होते हैं। उनका जीवन ही उनका उपदेश होता है। उनका हर कार्य जगत के मंगल के लिए होता है। अतः प्रेरणादायक व अनुकरणीय होता है। उनके सब कार्यकलाप स्वार्थ एवं अहम् से रहित होते हैं। वे कोई भी कार्य अपने स्वार्थ एवं अहम् पोषण के लिए नहीं करते, इसीलिए तो उनका जीवन पावन एवं निष्कलंक होता है।

आज के युग में भौतिकता ने सभी सीमायें पार कर दी हैं। धन के लोभ लालच में मनुष्य डूबता चला जा रहा है। लोभ–लालच ऐसा समुद्र है जिसका कोई किनारा नहीं होता। मानव के संकट, कलेष, कष्ट, दुःख, पीड़ायें बढ़ते चले जा रहे हैं। जीवन में संयम, व्रत, नियम देखने में नहीं आते, व्यक्ति उच्छृंखल होकर उचित अनुचित की सीमाएं लांघता चला जा रहा है। निरन्तर कुंठा, मन की अस्थिरता, अशान्ति, बेचैनी ने अधिकार कर लिया है। सामाजिक आचार व्यवहार नाम मात्र के रह गये हैं। व्यक्ति नितांत अकेला हो गया है, न उसका कोई है न वह किसी का है।

प्रेम, सेवा, करुणा, विश्वास, तप, श्रध्धा व निष्ठा का लोप होता जा रहा है। आवश्यकता मानवीय अन्तःकरण में इन तत्वों की, जो मृतप्राय हो गये हैं, पुनर्जीवित करने की है। इस पावन देश में जन्मे संतों का चिन्तन, मनन, कल्याण, कामना ही एक मात्र समाधान है। संत लोगों के पास मानवीय समस्याओं का समाधान होता है। संत लोग भेदों की दीवारों को गिराते हैं व

समाज के पथप्रदर्शक होते हैं, निम्न जीवन स्तर को उठाते हैं, प्रगति के मार्ग प्रशस्त करते हैं, जन सामान्य को उसके गंतव्य तक पहुंचाने का प्रयत्न करते हैं, पुरानी मृत रुढ़ियों को, परंपराओ को तोड़ते हैं । संतों का जीवन मौलिक एवं श्रेयस से परिपूर्ण होता है ।

संत समाज में क्रांति लाते हैं । वे अपना मार्ग स्वयं बनाते हैं, पर उन पर चलने के लिए किसी को बाध्य नहीं करते । वे व्यक्ति एवं समाज में आमूल- चूल परिवर्तन कर समाज को नयी दिशा देते हैं । पुराना मंदिर तुड़वाकर उसके स्थान पर नया मंदिर बनवाना उनका काम नहीं होता, वे तो व्यक्ति को ही उसका मंदिर बनवा देते हैं तथा आत्मा में ही परमात्मा का दर्शन, अनुभव कराना, उनका साध्य होता है। तात्कालिक परिवर्तन अथवा अल्पकालीन परिवर्तन वे नहीं चाहते, उनका उद्देश्य सर्वांगीण परिवर्तन होता है । अतः कह सकते हैं कि संत समाज में जो परिवर्तन लाते हैं वह स्थायी होता है वे व्यक्ति का, समाज का रुपान्तरण कर देते हैं । बाहर से देखने पर व्यक्ति पूर्ववत् ही दिखायी देता है। किन्तु भीतर अभूतपूर्व परिवर्तन होता है । संत भक्ति, ज्ञान व सत्य कर्म का महत्त्व भी प्रतिपादित करते हैं ।

संतों ने सदा ही मानव जाति को जीवन जीने की कला सिखायी है । उनके संदेशों में ब्रह्म, ईश्वर, परमसत्ता, समता, एकता, शुचिता, संयम, मानवता तथा सत्यम् शिवम् सुन्दरम् समाहित होता है । संतों के द्वारा दिये ज्ञान को समझना एवं आचरित करना होगा । संतो की शिक्षाओं में मानवता, अहिंसा, समता आदि दैवी गुणों का समावेश होता है। मानव जीवन में दैवी सम्पदाओं का प्रादुर्भाव होता है ।

अपने कर्म, वाणी, आचरण से संत सुरभित, सुसंस्कृत जीवन जीने का शिक्षण प्रशिक्षण देते रहते हैं । वे अपनी वाणी से नहीं, प्रत्युत कृतित्व एवं व्यक्तित्व से सोये हम लोगों को जागृत करते रहते हैं । वस्तुतः ऐसे लोग ही संत कहलाने के योग्य होते हैं । मानव जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान संतों की वाणी एवं उनके आचरण, कर्मों, सेवा सहायता के कार्यों में निहित होता है ।

जिंदगी

रज़ीना मोरिसवाला
लेखापरीक्षक

जब जब टूटा दिल मेरा,
तब तब चली कलम मेरी....
बहती गई शब्दों की नदी,
और बनती गई कविता मेरी....

कहते हैं आसान नहीं है सफर जिंदगी का,
अगर रखोगे हौंसले बुलंद और खुद पे भरोसा,
तब आसान ही आसान है सफर जिंदगी का,

अपनी मंजिलों तक पहुँचने का,
जरिया भी खुद तुम ही हो....
राहों में आएंगी कई मुश्किलें,
अगर बदलोगे नजरिया अपना,
तब मुश्किलें भी आसान नजर आएगी,

खुलकर जी ले तू जिंदगी का हर पल,
क्योंकि वापस न आएगा बीता हुआ पल जिंदगी का,
अरे बंदे, वापस न आएगा बीता हुआ पल जिंदगी का,

जब जब टूटा दिल मेरा,
तब तब चली कलम मेरी....
बहती गई शब्दों की नदी,
और बनती गई कविता मेरी....

मेरी नन्ही परी

सालिमा लाज़र
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरी नन्ही, प्यारी सी गुड़िया (पोती)
आई जब से, इस दुनिया में,
एक अजीब सा अहसास
लेकर आई है दिलोदिमाग में ।

तुझसे मुहब्बत करने लगे,
हम ज़िन्दगी से प्यार करने लगे,
डर न था अब तक मौत का,
मगर अब मौत से डरने लगे ।

नफ़रत भरी इस दुनिया में,
तुम मेरे जीने का आधार हुई
लोग रुलाना नहीं छोड़ते,
तुम्हारी एक हँसी कारगर हुई ।

बगिया में जैसे कलियों पे
भँवरा झूम-झूम मंडराता है,
नाजुक, कोमल-कोमल नन्ही सी,
कली को देख, मेरा मन खिल जाता है ।

जल्दी ही मेरी छोटी सी गुड़िया,
बड़ी और सयानी हो जाएगी ।
दुनिया के रंग में ढल जाएगी ।
मासूमियत खोकर 'स्मार्ट' हो जाएगी ।

आइये विचार करें

डॉ. संदीप बाजपेई
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पिछले कुछ समय से हम सभी ने महसूस किया है कि हमारे शहर अहमदाबाद का ट्रैफ़िक पहले से काफ़ी बेहतर हुआ है। चलने के लिए पहले से ज़्यादा मार्ग उपलब्ध है। सड़क पर आड़ी तिरछी खड़ी गाड़ियों का दृश्य अब पहले से काफी कम दिखाई पड़ता है। इस बदलाव के पूर्व बाहर आते-जाते ऐसा आभास होता था कि यह सब अब कभी नहीं सुधरेगा और हम सब सुबह शाम ट्रैफ़िक में इसी तरह रेंगने के लिए, जाम में फंसने के लिए अभिशप्त हैं। फ़िर अचानक ट्रैफ़िक नियंत्रण हेतु किसी विशेष अभियान के प्रारंभ होते ही सुखद परिवर्तन आने लगता है।

हम सब ने ऐसा अनुभव किया है कि अब ट्रैफ़िक सिग्नल पर अधिकतर लोग बत्ती के हरी होने तक रुकते हैं और अधिकांश लोग लाल बत्ती होने पर स्टॉप लाईन पर रुक भी जाते हैं। हालांकि कुछ उत्कट जिजीविषा वाले वाहन चालक फिर भी कुछ मीटर आगे बढ़ ही जाते हैं और धीरे धीरे कुछ सेंटीमीटर प्रति सेकंड की गति से आगे बढ़ते ही रहते हैं। कदाचित् उनका काम हमारे आपके काम से अधिक आवश्यक होता होगा या उनकी बुद्धि लब्धि (IQ) जनसामान्य से अधिक होती होगी ऐसा सोच कर हम खुद को कुछ सांत्वना अवश्य दे सकते हैं।

कई बार आप ऐसा पाएंगे कि सड़क पर उल्टी दिशा से बहुत सी गाड़ियां आ रही है, संभवतः थोड़ा सही दिशा में ज़्यादा लंबा चलकर आने से बचने के लिए। कभी कभी तो ऐसा लगता है कि हम अमेरिका, चीन या किसी अन्य 'लेफ़्ट हैंड ड्राईव' वाले देश में आ गए हैं जहां सिर्फ हम चंद लोग ही उल्टा चल रहे हैं, बाकी सब सही दिशा में चल रहे हैं। कभी-कभी विस्मय भी होता है कि भारत सरकार ने अचानक ट्रैफ़िक के नियम बदल दिये और

हमें कानोकान ख़बर भी न हुई । यदि हम ऐसा मान सकें कि हम लोगों को थोड़ी सी परेशानी में डाल कर ऐसे लोग शायद देश के और अपने पेट्रोल की बचत करने के वृहत्तर उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऐसा कर रहे हैं, तो शायद हमें अपने सही दिशा में चलने पर अफ़सोस नहीं होगा ।

ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे ट्रैफ़िक नियमों का पालन करने का एक बड़ा कारण शायद चारों तरफ लगे हुए सीसीटीवी कैमरे होते हैं जो नियमों का उल्लंघन करने पर हमें दंड का पात्र बनाते हैं ।

क्या दंड का भय, मात्र यही एक कारण हो सकता है जो हम भारतीयों को नियम का पालन करने के लिए प्रेरित कर सके ? आइये विचार करें, क्यों हमें सीसीटीवी कैमरों की आवश्यकता पड़ती है ट्रैफ़िक अनुशासन के पालन के लिए ? क्या ये सब नियम हमें वर्षों से ज्ञात नहीं है ?

उसी तरह से क्यों कई बार विभिन्न तरीके खोजे जाते हैं बहुत सारे लोगों का समय पर कार्यालय पहुंचना सुनिश्चित करने के लिए ? हम यह भी मान सकते हैं कि यदि सभी लोग समयानुरुप कार्यालय पहुंचने लगें तो कदाचित इस तरह के किसी उपाय की आवश्यकता ही न रहे । शायद यह सब हमारे व्यक्तिगत कर्तव्यबोध पर ही निर्भर करता है ।

ट्रैफ़िक लाइट पर थोड़ा आगे रुकने के बजाय सही जगह रुक जाने से हमें कहीं पहुँचने में अपेक्षाकृत अधिक से अधिक कुछ मिनट की देरी हो सकती है पर नियमों का पालन करके हम संतोष एवं गर्व की अनुभूति करेंगे। उसी प्रकार लगातार समयानुरुप कार्यालय आने पर भी संतोष ही होगा । कभी कभार होने वाली परेशानी या आवश्यक कार्य को कार्यालय भी समायोजित करता है और समाज भी ।

यदि हम सोचते हैं कि हमारे अकेले गलत करने से कितना फ़र्क पड़ता है, तो यह सही नहीं है । फ़र्क़ तो अवश्य पड़ता है । हमारे देश के १३५ करोड़ नागरिकों में सब तरह के लोग हैं, पढ़े-लिखे, अनपढ़, कलाकार, डॉक्टर, इंजीनियर इत्यादि । परंतु सिविक सेंस और देश के प्रति निष्ठा न तो शिक्षा दीक्षा पर निर्भर है और न ही पद पर । देश और समाज के नियमों का पालन करने का विचार तो व्यक्ति के अन्तर्मन में स्वतः ही आता है ।

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की नवीनतम रिपोर्ट में हम भ्रष्टाचार सूचकांक में विश्व में ८१ वें नंबर पर हैं। हम से काफी गरीब और पिछड़े कई देश हम से ज्यादा ईमानदार माने जाते हैं। आप पाएंगे कि आज समाज में भ्रष्टाचार में संलिप्त लोगों की अपेक्षा ईमानदार लोग अल्पसंख्य हैं। आज भ्रष्टाचार एक स्वीकार्य आचरण बन चुका है और हमें लेश मात्र भी नहीं खटकता।

नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में हमारी भूमिका को देखते हुए नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने में हमारा उत्तरदायित्व एक सामान्य नागरिक की अपेक्षा कहीं अधिक है। क्या हम इस बात का प्रण ले सकते हैं कि हम कार्यालय और समाज में अपना आचरण वैसा ही रखेंगे जैसा कि अपेक्षित है ?

मेरा ऐसा मानना है कि ख़राब बातों की ही तरह अच्छी बातें भी संक्रमणीय होती हैं। हम में से बहुत सारे लोग जो इन सभी बातों का अनुपालन करते हैं, उनका उत्तरदायित्व बनता है कि वे अपने आसपास के लोगों, परिवारजनों और इष्टमित्रों को अन्यथा आचरण करने पर समझायें और सही आचरण करने के लिए प्रेरित करें। यदि हम में से प्रत्येक व्यक्ति इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखे तो समाज, कार्यालय और देश में सकारात्मक परिवर्तन अवश्यंभावी है।

हिंदी पखवाड़े के दौरान मुख्य अतिथि का परिचय देती
श्रीमती रीना अभ्यंकर, पर्यवेक्षक, हिन्दी अनुभाग

आरुषी किरण माँ

सत्येन्द्र कुमार
डाटा एन्ट्री ऑपरेटर

आशा सारी झूठ हुई अब, चारों ओर हताशा है ।
सपने सारे टूट गए अब, चारों ओर निराशा है ॥
राह में राही रूठ गए अब, अपना नहीं सुहाता है ।
तम के बादल भाते मुझको, आरुष नहीं लुभाता है ॥
माँ तुम मेरे हृदय में आकर, जीवन दीप जला दो ना ।
अन्धकार में भटक रहा हूँ, मुझको राह दिखा दो ना ॥
तपती धूप में झुलस गया तन, छाया तनिक दिखा दो ना ।
अपने आँचल की छाया का, कतरा एक ओढ़ा दो ना ॥
अपने लहू से सींचा मुझको, जीवन की फुलवारी में ।
अपनी सारी खुशियां पायी, मेरी एक किलकारी में ॥
जीने का हर सार बताया, गा कर हर एक लोरी में ।
खुद भूखे रह मुझे खिलाया, भोजन तंग-ए-कटोरी में ॥
तेरे दिए हुए कदमों पर, चल कर राह बनायी है ।
तेरे वचन हृदय में रख, भटकों को राह दिखाई है ॥
माँ जब से तुम चली गयी हो, सब कुछ बस परछांई है ।
तनिक मुझे अब समझ न आता, वहम है या सच्चाई है ॥
बहुत हुआ अब टूट गया हूँ, जोश हृदय में भर दो ना ।
करुणा और वात्सल्य से भीगे, हाथ मर्म पर धर दो ना ॥
कदम कभी जब गलत बढ़ाऊँ, एक तमाचा जड़ दो ना ।
अपने कुल का नाम कमाऊँ, मुझको ऐसा वर दो ना ॥
जग में तेरा मान बढ़ाऊँ, मुझको ऐसा कर दो ना ।
माँ मैं तेरा लाल कहाऊँ मुझको ऐसा वर दो ना ॥

विदाई

शिवानंद
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

रोता नहीं हूँ कभी घर से लौटते वक्त,
क्योंकि मेरा रोना उन्हें कई दिनों तक रुलाता है,
दिल रोता है पर हँसता रहता हूँ झूठी हँसी
फिर भी किसी के चेहरे पर मुस्कान तक नहीं आती
हाँ, मुझे हँसता देख उनके आँसू थम जरुर जाते हैं ।

शायद मेरी हँसी को देख कुछ लोग मुझे पत्थर दिल समझें ।
पर यह इल्ज़ाम स्वीकार है मुझे उनकी खुशी के लिए ।

गर कोई देता है बख़्शीश मुझे पैसों की विदाई के समय,
रख लेता हूँ उसे एक बार भी नहीं मना करता,
क्योंकि वे पैसे नहीं होते बल्कि प्यार भरा होता है उनमें,
उसकी कीमत बाज़ार में कम हो सकती है,
पर वे खरीद लेते हैं मुझे उस पल के लिए ।
इसी बात पर याद आता है मुझे बचपन मेरा
जब मैं इसे केवल पैसा समझता था
मैं तब बाहर से शर्म से ना-ना और अन्दर से इंतज़ार करता था,
और न जाने क्या-क्या खरीदने और खाने के सपने देखने लगता था,
पर आज जब मैं मनचाहा खरीद-खा सकता हूँ
नहीं है ज़रूरत मुझे उसकी टॉफियों के लिए,
फिर भी न जाने क्यों
उस बख़्शीश को लेने से मना करने का साहस नहीं रहा मुझमें ।

यू. एन. यात्रा का संस्मरण

सुनीता रेनॉय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

दिसंम्बर २०१५ में जब मैं अपने छोटे पुत्र की देखभाल के लिए चाईल्ड केयर लीव पर थी, मुख्यालय के सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने मुझे सूचित किया कि फरवरी २०१६ में यू.एन. ओडिट की परीक्षा प्रस्तावित है। उन्होंने मुझसे यह पूछा कि क्या मैं परीक्षा देने के लिए इच्छुक हूँ ? उत्साह में मैंने उन्हे हाँ तो कह दिया परंतु फ़ोन रखने पर मुझे एहसास हुआ कि मुझे परीक्षा लिखने के लिए अपनी छुट्टी की अवधि को छोटा करना पड़ेगा और मेरे नौ महीने के छोटे पुत्र एवं बड़े बेटे को मेरी अनुपस्थिति के दौरान मेरे माता-पिता को देखना होगा। अपने परिवार के सुझाव को मानते हुए मैंने १५ फरवरी माता-पिता को अपने अहमदाबाद और राजकोट कार्यालयों के साथी कर्मचारियों के साथ मुंबई में परीक्षा लिख दी। परीक्षा में पूछे गए प्रश्न मेरे कार्यभार के संदर्भ में थे इसलिए मुझे ज़्यादा मुश्किल नहीं लगा।

मेरे साथ जिन अधिकारियों ने परीक्षा लिखी थी उनमें से कुछ अधिकारियों का जुलाई २०१६ में नामांकन हुआ और वह यू.एन. ऑडिट पर गये। चूंकि मेरा नामांकन नहीं हुआ था मैं थोड़ी उदास हुई और समय के साथ-साथ इस अनमोल मौके की उम्मीद मेरे अन्दर से कम होती चली गई। इस बात को पूरा एक साल बीत चुका था। फिर जुलाई २०१७ में एक दिन शाम को मुझे सी.ए.जी. ओफिस के आई.आर.विंग से फोन आया और उन्होंने बताया कि मेरा नाम यू.एन. ऑडिट के लिए नामांकित हुआ है और मुझे युनाइटेड नेशन्स जॉइंट स्टाफ पेंशन फंड और युनाइटेड नेशन्स एस्क्रो अकाउन्ट्स के ऑडिट के लिए न्यूयॉर्क जाना है। मेरे ऑडिट की अवधि कुल छः सप्ताह की थी जो अप्रैल २०१८ और मई २०१८ के महीनों में थी।

हमारी टीम में कुल छः लोग थे और इस टीम को कोलकाता के एकाउन्टेन्ट जनरल लीड कर रहे थे। ऑडिट शुरु होने के पहले आर.टी.आई. नागपुर में हमारी ट्रेनिंग का आयोजन किया गया, जिसमें मुझे अपने टीम मेम्बर्स से मिलने का मौका मिला। ट्रेनिंग के ख़त्म होने के बाद ऑडिट प्रोग्राम के तहत हम ८ अप्रैल को दिल्ली हवाई अड्डे से न्यूयॉर्क के लिए रवाना हुए।

न्यूयॉर्क पहुंचते ही जो हम सबने सबसे पहले महसूस किया वह था प्रदूषण रहित वातावरण और बेहद ठंड। हम सबने अपनी रहने की व्यवस्था मैनहेटन के एक होटल में कराई थी। खाने-पीने की आवश्यक सामग्री हम सब अपने साथ भारत से ही लेकर गए थे और ज्यादातर हम सब ऑडिट की अवधि के दौरान घर का ही खाना खाते थे।

यू.एन. के कार्यालयों में सारा कार्य पेपरलेस था। ऑडिट के लिए आवश्यक सारे रिकॉर्ड्स शेयर ड्राईव पर मिलते थे। हमारा ऑडिट संतोषजनक था और हमारे कार्य को काफी सराहा भी गया। न्यूयॉर्क ऑफिस में शनिवार और रविवार छुट्टी होने के कारण हमें बहुत सारी नई जगहों पर घूमने का मौका मिला। हम लोग सेन्ट्रल पार्क, स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी, ९-११ मेमोरियल, न्याग्रा वॉटरफॉल्स, वॉशिंग्टन, ब्रुकलिन ब्रिज, यू.एन. मुख्यालय जैसे ऐतिहासिक स्थलों और सुंदर जगहों पर घूमने गए थे।

अपने छः हफ्तों के प्रोग्राम में सबसे ज्यादा मैंने अपने परिवार को मिस किया था। मेरे टीम के सभी लोग काफी मिलनसार थे, इसलिए पूरे प्रोग्राम के दौरान हमें किसी भी तरह की असुविधा महसूस नहीं हुई। ऑडिट की अवधि के ख़त्म होने पर हम सब वापस अपने देश लौट आए और सी.ए.जी. मुख्यालय में रिपोर्ट प्रदान करने के उपरांत अपने अपने घरों को वापस लौटे।

न्यूयॉर्क जैसे सुंदर शहर में ऑडिट पर भेजने के लिए और यू.एन.ऑडिट जैसे महत्वपूर्ण दायित्व के लिए मुझे चुनने के लिए मैं हमेशा अपने कार्यालय के प्रति कृतज्ञ रहूँगी और यह उम्मीद रखती हूँ कि मेरे कार्यालय के और भी कर्मचारियों को ऐसे मौके मिलें।

अहमदाबाद - मेरी माँ की नजर में

वीना यादव

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

अहमदाबाद, मेरी कर्मभूमि, आज मुझे अपने घर से सिर्फ़ एक रात की दूरी का रास्ता लगता है। परंतु जब मैं नवीं कक्षा में थी तब लगता था, कि अहमदाबाद एक अनोखी जगह है, एक ऐसी जगह जहां पर जाना सरल नहीं और यह हमारे हरियाणा से न जाने कितनी ही दूरी पर स्थित है।

अहमदाबाद के किस्से कहानियाँ सुनकर ही मैं बड़ी हुई। मेरी माँ अपने माता- पिता के साथ अहमदाबाद में रहती थी। मेरे नानाजी का देहावसान भी अहमदाबाद में हुआ। परंतु माँ ने नाना जी और अहमदाबाद के इतने किस्से-कहानियां सुनाई कि लगता ही नहीं था कि हमारे नाना जी नहीं हैं। माँ की बातों से हमेशा उनकी अनुभूति होती रहती थी।

अहमदाबाद का कांकरिया तालाब, झूलती मीनार, सदर कैम्प, बाल वाटिका, सर्किट हाउस आदि के नाम मुझे बचपन में ही ऐसे याद हो गये थे जैसे कि ये सब मेरे घर की बगल में ही हों। उनसे जुड़े अनेक रोचक किस्से हैं, जिनका वर्णन करने के लिए पृष्ठों की संख्या कम पड़ जाएगी।

यह बात सन् १९६० की है। मेरी माँ अपने माता-पिता के साथ सदर कैम्प में खुशहाल जीवन जी रही थीं। वहां की सुबह खुशनुमा होती थी। सुबह साइकिल पर डबल-रोटी बेचने वाला आता था और मेरी माँ खुश होकर डबल-रोटी लेती थीं। आस-पड़ोस में बहुत सारे लोग थे जो सब मिलजुल कर रहते थे।

पास में ही साबरमती नदी की धारा बहती थी जिस पर हर रविवार को बच्चे नहाने जाते थे। नदी गहरी नहीं थी परंतु चौड़ाई काफी थी और पानी एकदम साफ़ होता था। वहां एक तरफ पावर हाउस था, वर्षा के समय नदी में ज्यादा पानी आने पर सब लोग उसे देखने जाते थे।

कांकरिया तालाब पर उस समय सब कुछ खुला-खुला था। शाम के समय घाट पर सब बैठते थे और बच्चे खेलते थे। वहाँ पर एक बाल-वाटिका थी, जो बहुत ही आकर्षक थी। उस समय वहां पर बकरा-गाड़ी चलती थी। मैं भी वर्तमान में अपने पुत्र को वहाँ लेकर गई परंतु बाल वाटिका में अब वो आकर्षण नजर नहीं

आया जैसा कि मेरी माँ के समय में था। परंतु कांकरिया तालाब अब एक आकर्षक पर्यटन-स्थल बन चुका है और अब यहाँ एक ट्रेन चलती है।

उस समय एक बार सरदार नगर के पास मेला लगा था जो कि काफी बड़ा था। इस मेले का मुख्य आकर्षण यह था कि स्टेज पर दो कलाकार नृत्य कर रही थीं तथा उन्होंने गाना गाया "काली जुल्फें रंग सुनहरा, दिलरूबा... दिलरूबा"। मेरी माँ सहित सब लोग हैरान थे कि वे नाच कहीं पर रहीं थी और पर्दे पर वे दूसरी जगह भी नाचती दिख रही थी। यह शायद भारत में टेलिविज़न की शुरुआत रही होगी।

उस समय झूलती मीनार भी बहुत प्रसिद्ध थी। हम भी वर्तमान में मीनार देखने गये परंतु दुर्भाग्यवश वह अब बंद हो चुकी है। उस समय गरबा का आयोजन भी बहुत अच्छे से होता था। हर गली का अपना गरबा होता था। पीतल के बर्तन बांटे जाते थे। उस समय ऐसा लगता था कि पूरा अहमदाबाद ही नाच रहा है। उस समय के लोगों में बहुत ही अपनापन देखने को मिलता था।

मेरी माँ का खुशहाल जीवन ऐसे ही चल रहा था कि एक दिन अचानक हार्ट-अटैक से मेरे नाना जी का स्वर्गवास हो गया और मेरी माँ को अपने पिता की यादों को समेट कर हमेशा के लिए अहमदाबाद छोड़ना पड़ा।

मैंने मेरी माँ से बचपन में वादा किया था कि मैं बड़ी होने पर उच्च अधिकारी बनूंगी और उन्हें अहमदाबाद जरुर ले जाऊंगी। मैं बड़ी अधिकारी तो नहीं बन पाई परंतु अहमदाबाद में नौकरी मिलते ही मैं मेरी माँ को ५० साल बाद उनके उसी घर में लेकर गई जहाँ बचपन में रहती थी। वहाँ जाकर हमने मकान मालिक का नाम बताया परंतु कोई ठीक से जवाब नहीं दे पाया। फिर उन्होंने मकान नंबर पूछा जो कि मेरी माँ को याद ही नहीं था, परंतु अचानक उनको तुरंत मकान नंबर भी याद आ गया।

मेरी मम्मी और पापा जी ने अपना परिचय दिया और हम उस घर के मेहमान बन गये। आश्चर्य की बात थी कि परिवार के सदस्यों ने भी मेरी मां को नाम व गांव के नाम से पहचान लिया। मेरी माँ की बचपन की दोस्त हंसा मौसी का नंबर भी उनसे मिल गया जिनके घर मैं भी अब आती-जाती रहती हूँ। मेरी माँ ने उस कमरे, चौकड़ी और वो स्थान जहाँ उनके पिता जी का पार्थिव शरीर रखा गया था, सब ध्यान से देखा और उनकी आंखो में पानी था। वहाँ से आने के बाद मेरी माँ के चेहरे पर असीम शांति थी। उन्होंने मुझे प्यार से धन्यवाद सहित आशीर्वाद दिया। मेरे मन में इस बात की संतुष्टि है और बेहद खुशी भी है कि मैंने अपना वादा पूरा किया और मैं अपनी माँ को उनके बचपन के अहमदाबाद में एक बार फिर से लेकर आई।

जाने कहाँ गया वो बचपन

वीना यादव
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

जाने कहाँ गया वो बचपन जो हम जिया करते थे,
हर गली लगती थी अपनी, हर घर अपना हुआ करता था।
दौड़ते थे खेत खलिहानों में, कभी तो खाते खट्टी कचरी
कभी चूसते मीठे गन्ने, नहीं पता था क्या होता है अपहरण,
न पता था क्या है डर।
हो जाती थी शाम गोधूलि नहीं पहुंचते थे अपने घर,
आ जाएंगे अपने बच्चे न होता था घर वालों को डर।
जाने कहाँ गया वो बचपन, जो हम जिया करते थे।
कहीं है कठुआ तो कहीं कोई दूसरी घटना
ना जाने कैसा अजब है माहौल।
चारों तरफ है डर व्याप्त और अविश्वास का माहौल,
पूछता है जब मेरा बेटा माँ मैं बाहर खेल आऊँ।
पूछता है वो जब कि माँ आपने भी तो अपना,
बचपन जिया था, खेलती थीं आप भी तो हरदम।
सुनकर उसके भोले प्रश्न मैं निरुत्तर रह जाती हूँ,
कैसे उसको अकेला खेलने भेजूँ ये सोच डर जाती हूँ।
क्या फायदे ऐसे विकास के जब हम अपने बच्चों,
को सुरक्षित जीवन न दे पाएं।
ना जी पाएं वो अपना बचपन, ना ही खुलकर वो हँस पाएं।
क्या दे पाएंगे हम उनको ऐसा बचपन जो हम जिया करते थे ?

तनाव

विद्या अय्यर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

आज हमारे देश में दो तरह से लोग परेशान हैं – एक जो भरपेट भोजन जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए जूझ रहे हैं। दूसरे जो सब सुविधाओं के बावजूद परेशान हैं। दूसरी श्रेणी के लोगों की परेशानी का सबसे बड़ा कारण है – अनावश्यक तनाव।

तनाव आज एक महामारी का रूप लेता जा रहा है। इसके कई कारण हैं लेकिन मुख्य कारण जो दिखाई देता है वह है अपने नैसर्गिक स्वभाव से अलग जीवन जीना।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह एक दूसरे के साथ रहने के लिए बना है। लेकिन तकनीक के अमर्यादित उपयोग ने इसी सामाजिकता पर बहुत गहरा प्रहार किया है। स्थिति यह आ गई है कि जागा हुआ हर व्यक्ति किसी न किसी स्क्रीन के सामने बैठा है। मोबाईल, लैपटोप, टीवी आदि सारे फुरसत के पलों को चट कर जाते हैं। मिलकर एक दूसरे से बात करना तो दिखाई ही नहीं देता। मिलजुलकर बात करने के बजाय हर तरह संवाद में इंसान आधे अधूरे ही एक दूसरे से मिलते हैं। और आज इंसान केवल इन्हीं आधे अधूरे तरीकों से संवाद कर रहा है। कुछ ऐसे दोस्त जिनसे बिना किसी तकल्लुफ के मिला जा सके जिन्दगी में बहुत ज़रुरी है। ऐसे दोस्त जो आपके हाव भाव से ही आपकी बातों को समझ सकें, ज़िंदगी के लिए बेहद अहम है। लेकिन मोबाईल के ज़रिए एक इंसान कई लोगों से मैसेज द्वारा बात करता है। यह बातचीत बड़ी सतही होती है। परिवार में भी खुले संवाद अब लगभग बंद हो चुके है। इसका नतीजा यह है कि मन के भावों का आदान प्रदान अब न के बराबर है। ऐसे में जब मन की बात किसी से नहीं होती तो तनाव तो होना ही है।

इसलिए तनाव मुक्त जिंदगी जीने के लिए सामाजिक प्राणी बनिए और एक दूसरे से मिलते जुलते रहिए।

आखिर क्यों ?

श्री हिमांशु धर्मदर्शी
प्रधान महालेखाकार

लोग कहते हैं कि "first impression is the last impression" यह बात एल्ला के लिए तो बिल्कुल ग़लत साबित हुई ।

पहली बार मैंने उसे देखा कैंटीन में । एक तो कैंटीन की स्वच्छता को लेकर वैसे ही मैं खुश नहीं था और फिर नज़र पड़ी एल्ला पर, नाटा कद, काला रंग व गंदे एप्रन पर अपने जलेबी के घोल वाले हाथ पोंछते हुए । क्या बनाता है यह? समोसा और जलेबी ! मैं नहीं खाऊंगा....

उसके हिस्से में सिर्फ नमकीन और मिठाई बनाने का काम था । ज़्यादातर वह समोसे और जलेबी बनाता, कभी बालूशाही, लड्डू या फिर टिकड़ी ।

एल्ला का नाम तो बड़ा लंबा था, असली नाम क्या था, मैं नहीं ज़ानता मगर जब वह आइज़ॉल आया तो उसका नाम इमानुएल रखा गया और उससे एल्ला ।

एल्ला के बारे में मेरी जानकारी तब बढ़ी जब भद्रा साहब आइज़ॉल आए । हम लोग रोज़ ऑफ़िस में खाना साथ-साथ खाते थे और एल्ला रोज़ दो सब्ज़ियाँ, दाल, ढेर सारे चावल भेजता । हर रोज मैं कहता कि दाल थोड़ी पतली बनाओ और सब्ज़ी में मिर्च कम डालो । अनुभव से मैं समझ गया कि अगर भद्रा साहब खाना खा सकते हैं तो वो ठीक है । बहुत बार समझाने पर एल्ला ठीक से पकाना सीख गया । क्योंकि मूलतः वह हलवाई था, रोज़ का सादा खाना बनाना मुश्किल था, उसके लिए ।

पहली बार हम लोग जब तामदिल तालाब की सैर पर गए तो वह हमारे साथ आया । तालाब की ताज़ी मछलियों को उसने और बाप्पू ने मिलकर अच्छे से पकाया और भद्रा साहब को खिलाकर प्रसन्न कर दिया । भद्रा साहब मेरी मौजूदगी में शायद संकोच कर रहे थे कि एक शुद्ध शाकाहारी के सामने मांस

कैसे खाएं ? छुप-छुप के उन्होंने टूटी-फूटी रसोई के चक्कर काटे और एल्ला ने भी साहब को प्यार से खिलाया ।

धीरे-धीरे एल्ला की झिझक कम हुई, दो तीन बार हम लोग रेईएक के रास्ते, एक विश्राम स्थल पर भोजन के लिए गए । एल्ला हर बार अच्छी सी पूरी-भाजी बनाकर लाता ।

रविवार बड़ा ही अजीब सा लगता है, मिज़ोरम का । सारे लोग या तो गिरिजाघर जाते हैं या फिर घर पर रहते हैं । सब कुछ बंद रहता है । यूं लगता है कि जैसे शहर को ताला लगा दिया गया है । दुकानें बंद, सारे बाज़ार बंद, चाय तक भी मिलना मुश्किल, यातायात बंद, सड़कें खाली-खाली सी ।

अकेला आदमी क्या करे ?

हम लोग पैदल मंदिर तक जाते और फिर लौटते हुए भद्रा साहब के घर जाते । इस तरह हमने कई बार रविवार की सुबह साहब के घर नाश्ता किया । नाश्ते का मेन्यु एक ही रहता, पूरी-भाजी ।

ऑफ़िस में जब जब कोई पार्टी होती तो एल्ला गरमागरम रोटी खिलाता। रोटी ठंडी हो जाये तो तुरंत गरम रोटी लेकर आता । साहब लोगों को गरम रोटी देने के लिए वह स्फूर्ति दिखाता तो संध्या चिढ़ाती, और हमारे लिए रोटी ? एल्ला जवाब देता, "थोडी देर रुको, बना देता हूँ ।" पास में बैठा शैलेन्द्र तुरंत चुटकी लेता, "सिर्फ लड़कियों को ही पूछोगे, एल्लाजी ?" उस को वह उसी के अंदाज़ में जवाब देता, "अरे, तोहरा लिए भी बना देबे !"

ऐसा लगा जैसे भद्रा साहब के आने से उसके जीवन में एक ज़बरदस्त परिवर्तन आया । वह साफ़-सुथरा दिखने लगा, कपड़े भी नये पहनने लगा और उसका चेहरा भी चमकने लगा । अब वह खुलकर बातें करता । दोस्तों से मज़ाक भी करने लगा था । एल्ला ने साहब को सहारा दिया कि साहब ने एल्ला को यह कहना तो मुश्किल है लेकिन दोनों ने एक-दूसरे को संभाला । अपनी सादगी, ईमानदारी और साहब की छोटी-छोटी बातों का ख़्याल रखकर एल्ला ने उनके दिल में एक विशेष जगह बना ली ।

जैसे-जैसे मेरे आइज़ॉल से जाने का समय पास आने लगा, अक्सर हम लोग मेरे यहाँ भी खाना बनाते । एल्ला आता और जो भी हो सके मदद करता।

अप्रैल २०१८ में आखिरी बार हम लोगों ने साथ-साथ रेईएक की चढ़ाई की। चढ़ते समय तो उसने हमें एक कहानी भी सुनाई। उस दिन एल्ला ने एक बार फिर सब को पूरी-भाजी खिलाई।

एक के बाद एक करके लोग उस से विदा ले रहे थे। एकमात्र उसकी बहन थी जो असाध्य बीमारी से ग्रस्त थी और उसके इलाज के लिए एल्ला पैसे भेजता था। एक दिन वह भी चल बसी। फिर कुछ दिन बाद भद्रा साहब का भी तबादला हो गया। साहब के जाने के बाद एल्ला अंदर से बहुत अकेला हो गया था शायद ! ज़िंदगी दिशाहीन हो गई हो जैसे।

एल्ला का शायद कोई दोस्त नहीं था हालांकि उसे अपने भगवान पर अगाध श्रद्धा थी और नियमित रूप से वह गिरिजा घर जाया करता था। लेकिन अकेला था वह।

भद्रा साहब के तबादले के बाद एक दिन अचानक, एल्ला हम सब को छोड़ गया। छत पर लटकने से पहले उसने अपने कैंटीन के साथी को आखिरी कॉल किया और कहा कि हो सके तो उसे बचा ले। लोग भाग कर पहुंचे भी, पर बहुत देर हो चुकी थी।

मुझे एहसास हुआ कि मरना कोई नहीं चाहता लेकिन जीने के लिए सहारा भी तो नहीं रहता।

हर आदमी की ज़िन्दगी में एक समय ऐसा आता है जब वह मन से अत्यंत कमज़ोर हो जाता है। उस वक्त यदि वह खुद को संभाल सका तो बच गया। शायद इसीलिए पुराने जमाने में श्रद्धा पर बहुत ज़ोर दिया जाता था। अगर हमें किसी पर श्रद्धा है, आस्था है तो संभव है कि उसी के सहारे हम कोई ग़लत कदम उठाने से बच जाएं।

इसी तरह कोई अपना हो, दिल से जुड़ा हुआ हो तो वो हमें संभाल लेगा। दोस्त इसीलिए होते हैं।

फिर भी यह सच है कि एल्ला अब नहीं रहा। क्यों किया ऐसा, तुमने एल्ला ? आखिर क्यों ? इस सवाल का मेरे पास कोई जवाब नहीं है।

पदोन्नतियाँ (२०१७-१८)

लेखापरीक्षा अधिकारी से वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अभिषेक पंवार, शैलेष कुमार श्रीवास्तव, संदीप कुमार बाजपेई, नीरज सिंह नेगी, राधा नायर, सुनील कुमार दास, धरम सिंह (प्रोफॉर्मा पदोन्नति), नीरज कुमार, आर.एम. खटाई, संजय प्रसाद, वेंकट एस. गोली, दीपक कुमार मिश्रा, ललित कुमार, शोभनाथ प्रसाद

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी से लेखापरीक्षा अधिकारी

सी.वी.एस.प्रकाश, एस.आर.गायकवाड़, गरिमा सिंह, विश्राम आर. मीणा, राम लखन गुप्ता, अमित सरकार, विलास चिमनकर, नितिन कुमार, वीरेंद्र डैला, राजेश कुमार शर्मा, एन.बी. वाजा, गणेश प्रकाश, अनिल कुमार बेनीवाल, रमेश कुमार शर्मा, रवीन्द्र सचान, आशीष यादव

वरिष्ठ लेखापरीक्षक से सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जगदीश मीणा, रंजीत कुमार, दीपक कुमार सिंह, मृगेश नकुम, गिरीश मिश्रा, अमर सूर्या, शिव कुमार रोहिल्ला, रवि कुमार-I, जयप्रकाश यादव, अमन बहल, संदीप, कय्यूम खान, फूल चंद, चन्द्र प्रकाश मिश्रा, जीतेश कुमावत, अजय कुमार पी. राठोड़, अनिल कुमार, रवि कुमार-II, विजय कुमार कनौजिया, कुमार संतोष, अशोक कुमार, बबलू कुमार सिंह, रवीन्द्र कुमार जांगिड़, पारितोष सांखला, ऋषिकेश मीणा, उपेंद्र कुमार, जुगल किशोर बागोरिया, ममतेश वैष्णव, सत्येंद्र कुमार

लेखापरीक्षक से सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अनूप कौशिक चेतन पी. पुष्कर्णा, सूर्यकान्त चौधरी, ईश्वर सिंह, राजपूत प्रभात, विजय कुमार पटेल, मनीष कुमार, गजेंद्र सिंह, शिवनाथ राय

डाटा एंट्री ऑपरेटर से सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बृजेश कुमार, पंकज लालजी भाई सोलंकी, रजनीश कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षक से पर्यवेक्षक

के. एस. व्यास, टी. आर. मीणा, के. आर. जाफरिया, पी. के. राजगुरु, जे. एन. परमार

लेखा परीक्षक से वरिष्ठ लेखापरीक्षक

दीपेश रामसिंह भाई पुन, चन्द्र प्रकाश मिश्रा, मोहित कुमार नरयाणी, ममतेश वैष्णव, सुधा शर्मा, प्रदीप कुमार मधेसिया, प्रहलाद सिंह देवान्दा, रवि रंजन कुमार सिन्हा, रमेश कुमार, जीतेश कुमावत, महेंद्र चिमनलाल सोलंकी, अजय कुमार पी. राठोड, दीपेन्द्र कुमार मीणा, सुभाष बंसीवाल, जितेंद्र राणा, समीर रंजन, अमर सूर्या, मुकेश कुमार (प्रोफॉर्मा पदोन्नति), शिव कुमार रोहिल्ला, रवि कुमार–I, मयंक मिश्रा, रवि कुमार–II

डाटा एंट्री ऑपरेटर 'ग्रेड ए' से डाटा एंट्री ऑपरेटर 'ग्रेड बी'

चन्दन कुमार

एम.टी.एस. से क्लर्क टाईपिस्ट

जागृत राज, एन.एन. पठान

नवीन नियुक्तियाँ (२०१७-१८)

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

शिवानंद, दुर्गेश कुमार

लेखापरीक्षक

नरेश कुमार यादव, विनोद कुमार कुमावत, गौतम सिंह, सुनील सरन, सचिन जाट्यान, स्वाति सिंह

डाटा एंट्री ऑपरेटर

मोनू सिंह, संदीप सिंह गहलोत, मोहित कुमार गोयल, जितेंद्र कुमार खत्री, कुंज बिहारी गोचर, लखन सैनी, बिन्दु वर्मा, राजवीर जाट, अजय कुमार मीणा, मनोज कुमार जांगिड, उमाशंकर यादव, सुरेन्द्र सिंह शेखावत

एम.टी.एस.

अल्काबेन जे. मकवाना

सेवानिवृत्तियाँ (२०१७-१८)

शंकर गोपालदास तेवानी (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी), के. एच. शाह (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी), ए. एम. दवे (पर्यवेक्षक), जे. बी. पटेल (पर्यवेक्षक), विजयालक्ष्मी गणेशन (पर्यवेक्षक), भाग्यलक्ष्मी यू. (पर्यवेक्षक), पी. डी. वाघेला (वरिष्ठ लेखापरीक्षक), बी. टी. पांडे (वरिष्ठ लेखापरीक्षक), पी. वी. बारिया (एम.टी.एस.), पी. बी. मिस्त्री (एम.टी.एस.)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आ. एवं रा.क्षे.ले.प.), गुजरात, अहमदाबाद
की क्रिकेट टीम के सदस्य ट्रॉफी के साथ

हमारे कार्यालय की क्रिकेट टीम के विजयी होने पर
टीम के सदस्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ

आरोहण

वर्ष : 2017-18

योग दिवस की एक झलक......

ऑडिट भवन, अहमदाबाद

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद
तथा
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) गुजरात, अहमदाबाद

ऑडिट भवन, नजदीक ईश्वर भुवन, नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380 009.